ॐ

तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ।।८।।

तप, आत्मसंयम, कर्म तथा अपने समस्त अंगों (वेदांगों) समेत वेदह्नह्वइस ब्रह्मविद्या के आधार हैं। सत्य उसका अधिष्ठान है।

ॐ

गुरु में पूर्ण श्रद्धा रखें और अपनी सम्पूर्ण सत्ता को उन्हें समर्पित कर दें। वह आपकी सँभाल करेंगे। उससे सम्पूर्ण भय, अन्तराय तथा कष्ट पूर्णतया नष्ट हो जायेंगे। **स्वामी शिवानन्द**

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवेकहीन साहचर्य से खतरा १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

किसी भी व्यक्ति के साथ अति-परिचय न कीजिए। **''अतिपरिचयादवज्ञा भवति''**—बहुत मेल-जोल से अवज्ञा बढ़ती है। मित्रों की संख्या न बढ़ायें। स्त्रियों के साथ मैत्री की अभियाचना न कीजिए। उनसे अत्यधिक परिचित भी न बनिए। स्त्रियों के साथ अति-परिचय अन्ततः आपके विनाश में परिसमाप्त होगा। इस बात को कभी भी न भूलिए। आपके मित्र आपके वास्तविक शत्रु हैं।

प्रतिजाति के व्यक्तियों से न मिलें। माया ऐसा छिपे-छिपे अन्तर्धारा से कार्य करती है कि आप अपने वास्तविक पतन से अवगत ही न होंगे। बिना एक क्षण की सूचना के ही काम-वासना अकस्मात् गम्भीर रूप धारण कर लेगी। आप व्यभिचार करेंगे और तत्पश्चात् पश्चात्ताप करेंगे। तब आपके चरित्र तथा यश नष्ट हो जायेंगे। अपयश मृत्यु से भी बदतर है। इससे अधिक जघन्य अन्य कोई अपराध नहीं है। इसके लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है। अतः सतर्क रहें। सावधान रहें।

भगवान् दत्तात्रेय ने स्त्री की एक प्रज्वलित अग्नि-कुण्ड तथा पुरुष की एक घृत-पात्र से तुलना की है। जब अवरोक्त पूर्वोक्त के सम्पर्क में आता है, तो वह नष्ट हो जाता है। अतः उसका परित्याग करें।

यदि आपको संयोगवश किसी धर्मशाला में रहना पड़े और आपके समीपवर्ती कमरे में अकेली स्त्री हो, तो आप उस स्थान को तुरन्त छोड़ दीजिए। आपको पता नहीं कि वहाँ क्या घटेगा। आप तप तथा ध्यान के अभ्यास से चाहे कितने भी शक्तिशाली हों, पर खतरे के क्षेत्र को तत्काल छोड़ देना ही सदा उचित है। अपने को प्रलोभन के जोखिम में न डालें।

जब आप आध्यात्मिक पथ पर प्रारम्भिक अवस्था में हों, तो अपने आत्म-बल तथा पवित्रता की कभी परीक्षा न करें। आध्यात्मिक पथ के नवीन पथिक को यह दिखाने के लिए कि उसमें पाप और मलिनता का सामना करने का साहस है, कभी कुसंगति में नहीं पड़ना चाहिए। यह बड़ी भारी भूल होगी। आप महान् आपत्ति में पड़ जायेंगे और शीघ्र ही आपका अधःपतन हो जायेगा। छोटी-सी अग्नि को रेत की ढेरी बड़ी आसानी से बुझा सकती है।

साधना की आरम्भावस्था में आपको महिलाओं से बहुत दूर रहना चाहिए। ब्रह्मचर्य के साँचे में पूर्णतः ढल जाने तथा उसमें प्रतिष्ठित होने के पश्चात् आप कुछ समय तक महिलाओं के साथ बहुत सावधानीपूर्वक हिल-मिल कर अपनी शक्ति की परीक्षा कर सकते हैं। उस समय भी यदि आपका मन अत्यधिक शुद्ध रहता है, यदि आपमें कामुक विचार नहीं आते हैं और यदि उपरति, शम तथा दम के अभ्यास के कारण मन निष्क्रिय हो गया है, तो स्मरण रखिए कि आपने सच्चा आत्म-बल प्राप्त कर लिया है

और अपनी साधना में पर्याप्त प्रगति की है। अब आप सुरक्षित हैं। आप अपने को जितेन्द्रिय योगी समझ कर अपनी साधना बन्द मत कर दीजिए। यदि आप अपनी साधना बन्द कर देते हैं, तो आपका निराशाजनक अधःपतन होगा।

योग-पथ में पर्याप्त प्रगति कर चुके उन्नत साधकों को भी बहुत सावधान रहना चाहिए। उन्हें स्त्रियों से मुक्त रूप से मिलना-जुलना नहीं चाहिए। उन्हें मूर्खतावश यह नहीं समझना चाहिए कि वे योग में परम प्रवीण हो गये हैं। एक प्रख्यात महान् सन्त का पतन हो गया। वे स्त्रियों से मुक्त रूप से मिलते थे। उन्होंने स्त्रियों को अपनी शिष्याएँ बनाया, जिन्हें वे अपने पैरों की मालिश करने देते थे। क्योंकि काम-शक्ति का उदात्तीकरण पूर्णतया नहीं किया गया था तथा वह ओज में रूपान्तरित नहीं की गयी थी, और क्योंकि कामुकता सूक्ष्म रूप से उनके मन में घात लगाये बैठी थी, वे काम-वासना के शिकार बन गये तथा अपनी प्रतिष्ठा खो बैठे। काम-वासना उनमें दमित थी और जब उपयुक्त अवसर आया, तब इसने पुनः विकट रूप धारण कर लिया। उनमें प्रलोभन का प्रतिरोध करने की शक्ति अथवा मनोबल नहीं था।

एक अन्य महात्मा, जो अपने शिष्यों द्वारा अवतार माने जाते थे, योग-भ्रष्ट हो गये। वे भी महिलाओं से मुक्त रूप से मिलते-जुलते थे। वे एक गम्भीर भूल कर बैठे। वे कामुकता के शिकार बन गये। क्या ही खेदजनक दुर्भाग्य! साधक बड़ी कठिनाई से योग-रूपी निश्रयणी पर आरोहण करते हैं और अपनी असावधानी तथा आध्यात्मिक अहंकार के कारण अनुद्धार्य रूप से सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

(अनूदित)

सूचना

महाशिवरात्रि

पवित्र महाशिवरात्रि शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में **२ मार्च २०११** को मनायी जायेगी। श्री विश्वनाथ मन्दिर में दिन में और सारी रात्रि समवेत स्वर में पंचाक्षर-मन्त्र (**'ॐ नमः शिवाय'**) के अखण्ड कीर्तन के अतिरिक्त अभिषेक, सहस्रनामार्चना तथा रुद्र, नमक, चमक, पुरुषसूक्त, नारायणसूक्त और श्रीसूक्त के पाठ के साथ भव्य पूजा की जायेगी। इस व्रत में सम्मिलित होने के विचार से हमें यथेष्ट समय पूर्व अवगत करा कर आने वाले भक्तों का हार्दिक स्वागत है। उन्हें अपने आने की सूचना **'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड'** को दे देनी चाहिए। जो स्वयं न सम्मिलित हो सकें, वे **'व्यवस्थापक, मन्दिर डिपार्टमेन्ट, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्द आश्रम, पो. शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड'** को अपनी इच्छा से सूचित कर देंगे, तो उनके नाम से भी पूजा की जायेगी।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

परमात्मा से परमात्मा का वार्तालाप

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

एक दिन जब मैं यात्रा से लौट रहा था, तो मैंने हरिद्वार की जगह देहरादून उतरने का सोचा। गाड़ी के उसी डिब्बे में एक महिला तथा उसके पति भी यात्रा कर रहे थे। वे दोनों आपस में इस विषय पर चर्चा करते हुए अपना असन्तोष व्यक्त कर रहे थे कि भारत में युवकोंह्वह्वजो कि देश का धन हैंह्वह्वके प्रशिक्षण के लिए कोई सुविधा नहीं है। मैंने उनके वार्तालाप में सम्मिलित होते हुए बहुत-सी ऐसी संस्थाओं की ओर संकेत किया जो आने वाली पीढ़ी के लिए सचमुच बहुत-कुछ कर रही हैं।

अन्ततः जब देहरादून के निकट पहुँचने लगे, तो वह महिला बोलीह्वह्व''स्वामी जी! आप इतना कुछ जानते प्रतीत होते हैं, कृपया मुझे भी अपने ज्ञान में से कुछ दें, कुछ ऐसा जो मैं अपने जीवन-भर के लिए ग्रहण कर सकूँ।'' मैंने कहाह्वह्व''देखिए, वह तो मैं दे ही रहा था और मेरा विचार है कि उतना ही काफी था, फिर भी जब आप व्यक्तिगत रूप से जिज्ञासु साधक बन कर कुछ माँग रही हैं, तो मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं कुछ ज्ञान दूँ। इसलिए मैं अवश्य कुछ कहूँगा।''

मैंने कहाह्वह्व''पहला ज्ञान जो मैं आपको देना चाहता हूँ, यह है कि यह जीवन केवल एक यात्रा है। आप यहाँ आयी हुई हैं, आप यहाँ की नहीं हैं। आप एक यात्रा पर हैं और इस यात्रा के समाप्त होने पर आपको यहाँ से जाना पड़ेगा। इसलिए यहाँ पर वास्तव में आपका कुछ भी नहीं है। न ही आप यहाँ की हैं। यह प्रथम सत्य है।

''दूसरा सत्य यह है कि जब कोई व्यक्ति यात्रा पर जाता है, तो प्रायः उसका कोई एक पहुँचने का स्थान निर्धारित होता है। आपने अपने लिए कौन-सा स्थान निर्धारित किया है? क्या यह उसी के सम्बन्ध में है जिसकी आप अपने पतिदेव से चर्चा कर रही थीं? क्या वही आपका गन्तव्य है? इसके बारे में सोचें! आपका गन्तव्य यहाँ की कोई वस्तु नहीं हो सकती, क्योंकि आप यहाँ की नहीं हैं। यदि आप अपने पहुँचने का स्थान अर्थात् अपना लक्ष्य यहाँ का रखेंगी, तो वह यहीं रह जायेगा और आप कहीं और चली जायेंगी। अतः सांसारिक, लौकिक और नश्वर लक्ष्य भले ही कितना भी महान् क्यों न हो, आपको शाश्वत लाभ नहीं दे सकता।

''भले ही वह उद्देश्य अणु-अस्त्रों की रोक जैसा महत्त्वपूर्ण हो, जिसके ऊपर धरती और समस्त मानव-जाति का भाग्य टिका हुआ है। भले ही वह लक्ष्य युनाइटेड नेशन, विश्व बैंक अथवा अन्तर्राष्ट्रीय वित्त कोष से सम्बन्धित कितना ही बड़ा क्यों न हो। यह सब-कुछ नगण्य है, क्योंकि इनमें से कुछ भी आपका वास्तविक लक्ष्य नहीं हो सकता, क्योंकि यहाँ पर आप भले ही कुछ भी उपलब्धि प्राप्त कर लें,

आप अन्ततः खाली हाथ ही यहाँ से जायेंगी। अतः सोचिए!

''तीसरा सत्य : ये सब महत्त्वपूर्ण प्रश्न, जिनकी आप चर्चा कर रही थीं कि भारत में युवकों के उचित प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है और आपको उसके सम्बन्ध में कुछ-न-कुछ अवश्य करना चाहिएह्वह्वआपकी इस अहंपूर्ण भावना पर आधारित है कि आप कुछ हैं और आप कुछ कर सकती हैं।

''देखिए, आपके, आपके पति के तथा अन्य सब लोगों के आने से सैकड़ों-हजारों वर्षों से पहले भी यह संसार चल रहा था। आप अभी आये हैं और इसी तरह कुछ ही समय बाद लुप्त हो जायेंगे जैसे वर्षाकालीन कीट-पतंग चौबीस घण्टे का छोटा-सा जीवन जी कर नष्ट हो जाते हैं। साम्राज्य आये और चले गये। आप भी आये हैं और चले जायेंगे। जीवन का नाटक चलता रहेगा, संसार यों ही चलता रहेगा। १००० वर्ष, २००० वर्ष, १०००० वर्ष यों ही निरन्तर चलता रहेगा।

''आप कुछ भी नहीं हैं। एक उच्चतर शक्ति है जो इस संसार को युगों से चला रही है। वैज्ञानिकों का मत है कि इस पृथ्वी पर जीवन के चिह्न अनेक सहस्र वर्ष पहले से मिले हैं। सहस्रों वर्षों के सामने आपका यह ३६५ दिन का वर्ष क्या है? अतः इसके लिए चिन्ता न करें। जिस संसार के बारे में आप इतनी चिन्तित हैं, उसका ध्यान रखने में पूर्णतया सक्षम एक उच्चतर शक्ति है। उस शक्ति को आप-जैसी महिलाओं की आवश्यकता नहीं है। अच्छा होगा, यदि आप स्वयं अपनी चिन्ता करें जिससे कि इस छोटे से बहुमूल्य मनुष्य-जन्म के आरम्भ और अन्त हो जाने के थोड़े से समय में स्वयं अपना सुधार करने के लिए कुछ कर लें, स्वयं अपने भीतर छिपी हुई क्षमता को प्रकट कर लें।

''और इस संसार से जाने से पहले भगवान् ने आपको अपनी जिस सृष्टि में भेजा है, उसका अधिक-से-अधिक जितना भला कर सकती हैं, कर लें। केवल एक यही काम है जो जीवन को जीने योग्य बनाता है। जीवन का महत्त्व इससे नहीं आँका जाता कि आपने क्या कितना संग्रह कर लिया है, क्या पद प्राप्त किया है, कितनी जनता को कितने भाषण दिये हैं अथवा कितनी किताबें लिख डाली हैं। ये सब अहंपूर्ण खोखली कल्पनाएँ हैं। जीवन का वास्तविक मूल्य इसमें निहित है कि यहाँ इस संसार में आ कर, जाने से पहले आपने कितने लोगों में खुशी बाँटी है, कितनों को लाभ पहुँचाया है, भगवान् की इस सृष्टि में आप कितने उपयोगी सिद्ध हुए हैंह्वह्वकेवल मानव मात्र के प्रति ही नहीं, समस्त प्राणी-वर्ग के प्रति।''

मैंने कहाह्वह्व''रोते हुए कितने बच्चों के, कितनी विधवाओं के, कितने असहाय लोगों के आँसू आपने पोंछे हैं, सुदूर गाँवों में जहाँ न पीने के पानी की सुविधा है, न स्वच्छता है न शिक्षा है, ऐसे रोगों से ग्रसित निर्धन और पीड़ित, कितने लोगों की सुख-सुविधा के लिए आपने कुछ किया है? कुछ करने का प्रयास करें। जायें और उनके लिए सही सड़क जुटाने का प्रयत्न करें, वे तो वर्षा-काल में संसार से अलग ही पड़ जाते हैं। सुविधापूर्ण बड़े नगरों में मत जाना, ग्रामीण, कष्टों से ग्रसित समाज में जाना और वहाँ सफाई और डाक्टरी सहायता लाने का प्रयास करना। मोतियाबिन्द से नेत्रों का प्रकाश खो चुकने वालों के

लिए नेत्र चिकित्सा शिविरों का आयोजन करना। तब है कि आपने कुछ किया।

''हमारी संस्कृति, हमारे देश का उच्चतम आदर्श परोपकारी जीवन जीने का हैह्वह्वअर्थात् दूसरों को लाभ पहुँचाना, दूसरों के लिए उपयोगी होना, केवल अपने लिए ही नहीं जीना। परोपकार सर्वश्रेष्ठ आदर्श है। वह तो यहाँ तक मानते हैं कि यह जीवन मिला ही केवल इसी के लिए है। अतः अपने दृष्टिकोण को बदलें!

''यह मैं आपको व्यक्तिगत रूप से कह रहा हूँ। तब फिर लक्ष्य क्या है? आपका लक्ष्य जहाँ से आये हैं, वहीं पहुँचना है। एक परम पिता परमात्मा हैं। आप यह मांस-हड्डियों का पिंजराह्वह्वयह शरीर मात्र नहीं हैं। आप पाँच कर्मेन्द्रियाँ या पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ भी नहीं हैं। आप यह मन, भावनाएँ, कल्पनाएँ तथा काम, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या-द्वेष इत्यादि की विभिन्न वृत्तियाँ भी नहीं हैं। शीशा देखते समय जिसे आप मैं मानते हुए उससे तादात्म्य जोड़ लेते हैं, वह 'तुच्छ मैं' भी आप नहीं हैं। यह सब आप कुछ भी नहीं हैं। आप तो उज्ज्वल चेतना का, प्रकाशमय चेतना का केन्द्र हैंह्वह्वशाश्वत, अनश्वर, अजन्मा, कालातीत, स्थानातीत, अनन्त! श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय का नित्य पाठ करें!''

इस प्रकार हमने एक-दूसरे से विदा ली। मैंने उनसे इस प्रकार बातें नहीं की जैसे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से वार्तालाप करता है। मैंने उसी प्रकार कहा जैसे परमात्मा उस महिला के भीतर के परमात्मा से कुछ कह रहा हो। और मैंने बताया कि आप उसी आयाम से सम्बन्धित हैं। यह स्वर्णिम अवसर मिला है कि स्वयं को इस बद्ध चेतना से ऊपर उठा कर अनन्त चेतना के, वैश्व चेतना के आयाम तक ले जाया जाये। हम सब यहाँ इसी के लिए आये हैं।

उसने आशीर्वाद माँगा। मैंने कहा, जो-कुछ आपके हृदय में है, जो आकांक्षा आपके मन में है, जिसकी तीव्र इच्छा आप कर रही हैं, परमात्मा उसे पूर्ण करें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

ज्योति आपके अन्दर है

सदा धार्मिक बनिए। धर्म-मार्ग से कभी विचलित न होइए। सदाचारी बनिए। वीर बनिए। निर्भय बनिए। सत्य का अभ्यास कीजिए। सर्वत्र इसकी घोषणा कीजिए।

आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ते जाइए। आपके अन्दर ही ज्योति है। ईश्वर पर मन को एकाग्र कीजिए। अहंकार तथा अभिमान को मार डालिए। सहानुभूति तथा विश्व-बन्धुत्व का अर्जन कीजिए। सबसे प्रेम कीजिए। आप परिपूर्ण जीवन प्राप्त करेंगे।

इन्द्रियों का दमन कीजिए। गम्भीर श्रद्धा तथा हार्दिकता के साथ उसकी प्रार्थना कीजिए। ईश्वर के अस्तित्व तथा आध्यात्मिक साधनाओं की शक्ति में अविचल विश्वास कीजिए। नम्र तथा सरल बनिए। आप अमरत्व को प्राप्त करेंगे।

स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन संघ के मूलभूत आदर्श

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

कुछ सत्यान्वेषी साधकों ने, जो किसी विशेष पन्थ या मत से सम्बद्ध होना नहीं चाहते थे, एक ऐसी संस्था की आवश्यकता अनुभव की जो विशिष्ट धार्मिक सम्प्रदाय या आन्दोलन की पोषक न हो कर समस्त धर्मों के प्रत्येक सारभूत सत्य की समर्थक हो। उन्होंने अपना यह विचार मेरे समक्ष व्यक्त किया। इसके परिणाम-स्वरूप सन् १९३६ में 'दिव्य जीवन संघ' (द डिवाइन लाइफ सोसायटी) का जन्म हुआ।

सबके लिए एक आध्यात्मिक आवास

बींसवीं शती के भौतिकवाद, युद्ध और उनसे उत्पन्न अशान्ति एवं धार्मिक सिद्धान्तों के प्रति असहिष्णुता की भावना ने व्यक्तियों के मन में एक ऐसी आध्यात्मिक बुभुक्षा उत्पन्न कर दी थी जो आस्था तथा चिन्तन की स्वतन्त्रता से ही शान्त हो सकती थी। अतः एक ऐसे आध्यात्मिक संस्थान की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी जो सबके लिए हो; जिसमें प्रवेश पाने की अर्हता हो मात्र सच्ची अभीप्सा तथा अपने उच्चतर मन की माँगों के प्रति पूर्ण जागरूकता; जिसमें रहने वाले व्यक्ति दूसरों की सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक पृष्ठभूमियों के प्रति सम्मान का भाव रखते हुए व्यक्तिगत विकास के नियम के अनुरूप अपना-अपना विकास कर सकें; जहाँ ईसाई और अच्छे ईसाई बनने के लिए, हिन्दू और अच्छे हिन्दू बनने के लिए तथा मुसलमान और अच्छे मुसलमान बनने के लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त कर सकें तथा जहाँ व्यक्ति अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुए एक ऐसे वातावरण में साँस ले सकें, जहाँ हो स्वतन्त्रता, सार्वजनीनता, प्रेम तथा बन्धुत्व की भावना। यह था दिव्य जीवन संघ की स्थापना का मूल उद्देश्य।

सामान्य सिद्धान्त

दिव्य जीवन दैनिक जीवन में योग ही है। और, योग है आध्यात्मिकता का व्यावहारिक पक्ष। मैं किसी से यह नहीं कहता कि दिव्य जीवन व्यतीत करने के लिए जंगलों की ओर पलायन करना होगा। मैं सदैव कहता हूँ—एक-दूसरे की सेवा करें, एक-दूसरे को सहयोग दें, एक-दूसरे को समझें, एक-दूसरे के प्रति सद्भाव रखें, अपना दृष्टि-क्षेत्र विकसित करें, स्वार्थ से परार्थ की ओर तथा भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ें तथा सबमें भगवान् की उपस्थिति अनुभव करें। इस तथ्य को समझें कि आप और सम्पूर्ण विश्व एक ही हैं। अपना दृष्टिकोण विशाल बनायें। अपनी निम्नतर प्रकृति को शुद्ध करें। यही दिव्य जीवन संघ का सिद्धान्त है।

सत्य, प्रेम तथा शुचिता के आदर्शों को न भूलें। सत्य एक स्थायी तथ्य है। प्रेम जीवन में सत्य की अभिव्यक्ति है। सत्य सबमें व्याप्त है। सत्य के अभाव में प्रेम का स्थायित्व सन्दिग्ध है। शुचिता के बिना प्रेम

पुष्पित नहीं होता। शुचितापूर्ण (पवित्र) मन से ही सच्चा तथा निष्कपट प्रेम किया जाता है। जिसका हृदय ईश्वर तथा उसकी सृष्टि के प्रति प्रेम से परिपूर्ण है, जो यह समझता है कि ईश्वर प्रत्येक प्राणी में उपस्थित है, वही सत्य को समझ कर सत्य-मार्ग का पथिक बन सकता है। इसी कारण सत्य, प्रेम तथा शुचिता दिव्य जीवन संघ के सामान्य आदर्श हैं।

मुख्य आदेश

सदैव मेरा यह आदेश रहा हैह्वह्वसेवा करें, प्रेम करें, ध्यान करें, आत्म-साक्षात्कार करें, भले बनें, भला करें। इन शब्दों में विश्व के समस्त धर्मग्रन्थों का सार समाहित है। ये ही दिव्य जीवन के आधार हैं। जो ईश्वर का ध्यान करता है, उसके हृदय से प्रेम प्रवाहित होता है। सेवा प्रेम की सहज अभिव्यक्ति है। आत्म-साक्षात्कार इन सबका सुखद परिणाम है। दिव्य जीवन से भलाई का जन्म होता हैह्वह्वयों भी कह सकते हैं कि दोनों एक ही हैं। भला होने का अर्थ हैह्वह्वदूसरों के लिए भलाई के कार्य करना। अपने लिए भले कार्य करने से कोई भला नहीं बन जाता। भला बनने के लिए दूसरों के लिए भले कार्य करने चाहिए। इस प्रकार दिव्य जीवन संघ व्यावहारिक बनने पर बल देता है। मानव-जीवन तथा सामाजिक विकास के प्रति संघ का दृष्टिकोण व्यावहारिक उपयोगितावाद पर आधारित है।

एक बृहत् परिवार के रूप में सम्पूर्ण मानवता दिव्य जीवन के सूत्र से परस्पर सम्बद्ध हो गयी है। दिव्य जीवन हमें ईश्वर के साथ, दूसरों के साथ, संसार के साथ और स्वयं के साथ अपने सम्बन्धों को समझने का एक अवसर प्रदान करता है। दिव्य जीवन आत्मज्ञान के कोष की कुंजी है। यह जीवन के नियमों को समझने में सहायता प्रदान करता है। यह समस्त दर्शनों का आधार तथा समस्त धर्मों का जनक है। यह एक ऐसा मार्ग है जिस पर कोई भी व्यक्ति चल सकता है। दिव्य जीवन संघ का उद्देश्य दिव्य जीवन के सन्देश को सर्वत्र प्रसारित करना है।

व्यावहारिक प्रशिक्षण

दिव्य जीवन संघ संसार-भर में फैली हुई अपनी शाखाओं के माध्यम से विभिन्न धर्मावलम्बियों तथा विभिन्न दार्शनिक मतों के अनुयायियों पर रचनात्मक प्रभाव डाल रहा है। संघ यथासम्भव अधिकाधिक व्यक्तियों से सम्पर्क करके उनके हृदय-मन्दिर में दिव्य जीवन की पूर्ति को प्रतिष्ठापित करने में रत है। संघ का सदस्य बनने हेतु व्यक्तियों को मात्र इसके लिए प्रतिबद्ध होना पड़ता है कि वे यथाशक्य सत्य, प्रेम और शुचिता का जीवन व्यतीत करेंगे। संघ से सम्बद्ध अनेक सदस्यों ने जब सम्पूर्ण निष्ठा के साथ सरल साधना का अभ्यास करना प्रारम्भ किया, तब वे यह अनुभव करने लगे कि उनका जीवन आध्यात्मिक ऊर्जा से अनुप्राणित होता जा रहा है।

मुख्यालय (शिवानन्दाश्रम) में विश्व के अनेक भागों से अगणित साधक आ कर नैतिक अनुशासन, एकाग्रता, ध्यान, योगासन तथा प्राणायाम का प्रशिक्षण तथा ज्ञानयोग (अन्तःप्रज्ञात्मक-साक्षात्कार में बौद्धिक परितोष की प्रक्रिया), भक्तियोग (भक्ति तथा आत्म-समर्पण के माध्यम से भावनात्मक उत्कर्ष की प्रक्रिया), राजयोग (रहस्यमय अतिचेतनावस्था में गुह्य उपलब्धि की प्रक्रिया) तथा कर्मयोग (मानवमात्र की सक्रिय निःस्वार्थ सेवा तथा उस सेवा द्वारा

कर्म-सम्पादन को परम सत्ता की उपासना मानने का सम्यक् बोध प्राप्त करने की प्रक्रिया) का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

आरण्य विद्यापीठ

सन् १९४५ में योग-वेदान्त आरण्य विद्यापीठ (योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी) की स्थापना हुई। इसके परिणाम-स्वरूप इस प्रशिक्षण का शिक्षकीय-पक्ष अधिक व्यवस्थित हो गया। इस योग-विद्यालय में सहस्रों भारतीयों और विदेशियों ने प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया है। विश्व के छह महाद्वीपों में संघ की शाखाएँ तथा योग-वेदान्त-केन्द्र कार्यरत हैं तथा वे स्थानीय साधकों की आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इन शाखाओं तथा केन्द्रों में सामान्य कक्षाओं का संचालन किया जाता है तथा मुख्यालय द्वारा प्रशिक्षित साधकों से सम्पर्क स्थापित करने की सुविधा प्रदान की जाती है। दिव्य जीवन सम्मेलन भी आयोजित किये जाते हैं। संघ के परिव्राजक सन्त भी जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते हैं।

सेवा के अन्य पक्ष

सेवा के चिकित्सा तथा शैक्षिक पक्षों का भी ध्यान रखा जाता है। मुख्यालय के सामान्य चिकित्सालय तथा नेत्र-चिकित्सालय में चिकित्सा राहत कार्यक्रमों के द्वारा रोगियों की निःस्वार्थ-भाव से सेवा की जाती है। प्राथमिक तथा उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक विद्यार्थियों को आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। दिव्य जीवन संघ की शाखाएँ अपनी कार्य-पद्धति तथा अपने कार्य-कलापों की रूपरेखा बनाते समय मुख्यालय का ही अनुकरण करती हैं। वे सचमुच मानवता की प्रशंसनीय सेवा कर रही हैं।

सक्रिय प्रचार-प्रसार

मेरा सुझाव हैह्लह्लआध्यात्मिक जीवन व्यतीत करें तथा व्यक्तिगत उदाहरण प्रस्तुत करके दूसरों को भी ऐसा जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करें। आपके व्यक्तिगत जीवन से दिव्य जीवन का विकिरण हो। दिव्य जीवन संघ की प्रत्येक शाखा सत्य का तीर्थस्थल बने; दिव्य जीवन संघ का प्रत्येक सदस्य दिव्य जीवन का चलता-फिरता देवालय बन जाये! आपमें से प्रत्येक का मिशन बनेह्लह्लदिव्य जीवन के सन्देश का प्रचार-प्रसार। आप इसके प्रति समर्पित हो जायें। यही समय की माँग है। यह न सोचें कि अन्य लोग यह कार्य करने के लिए आपसे कहेंगे। हमेशा उचित अवसरों की खोज में रहें तथा प्राप्त होते ही उनका सदुपयोग करें। आपमें पहल-शक्ति की कमी न होने पाये। दूसरों की सेवा करने के लिए स्वयं अवसरों का निर्माण करें तथा द्वार-द्वार जा कर दिव्य जीवन का सन्देश पहुँचायें। समस्त उपहारों में दिव्य जीवन का उपहार सर्वोत्तम है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान अब आवश्यक हो गया है। मानव-जीवन में आध्यात्मिकता पुष्पित होह्लह्ल यही वास्तविक संस्कृति है। देश की समृद्धि तथा विश्व-शान्ति का रहस्य इसी तथ्य में छिपा हुआ है। मानव आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक है। सन् १९५० में मैंने भारत-लंका की यात्रा की थी। उस यात्रा में मुझे यह अनुभव हुआ कि अनगिनत लोग दिव्य जीवन के बारे में जानने को उत्सुक हैं। आध्यात्मिक जीवन का ज्ञान प्राप्त करना उनका

जन्मसिद्ध अधिकार है। हम उनके इस अधिकार की उपेक्षा नहीं कर सकते। दिव्य जीवन संघ के विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारत तथा विदेशों में दिव्य जीवन के सिद्धान्त प्रसारित किये जाते हैं तथा विभिन्न प्रकार से मानवता की सेवा की जाती है। मेरी कामना है कि संघ के कार्यक्षेत्र का अधिकाधिक प्रसार हो!

एक उपयुक्त उपकरण

धर्म की वास्तविक आत्मा की पुनर्स्थापना होनी चाहिए। मानव-हृदय में धर्म को पुष्पित होना चाहिए। अब लोग धर्मान्धता तथा हठधर्मिता की संकीर्णता से मुक्त हो कर धर्म के लालित्य को आत्मसात् करने के लिए तैयार हैं। सभी समझदार व्यक्तियों में धार्मिक ऐक्य स्थापित करने तथा आध्यात्मिक परितोष प्राप्त करने की कामना है। इस कामना की पूर्ति हेतु दिव्य जीवन संघ एक उपयुक्त उपकरण है।

दिव्य जीवन संघ के साधकों पर ईश्वर के अनुग्रह की वर्षा हो!　　**(अनूदित)**

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।　　**स्वामी शिवानन्द**

इतिहास एवं पुराण ६

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

पुराण

पुराण वे इतिवृत्त (इतिहास) हैं, जिनमें पुरातन इतिहास, मिथकशास्त्र, धार्मिक उपदेश, दर्शन, योग, रहस्यात्मक उपलब्धियों, आध्यात्मिक साक्षात्कार से सम्बन्धित तथा इनसे मिलते-जुलते विषयों पर आधारित सामग्री है।

पुराणों की अधिकतर सामग्री में विष्णु, शिव, देवी, गणेश तथा स्कन्द द्वारा अपने मूल स्वरूपों में अथवा अपनी विभिन्न अभिव्यक्तियों द्वारा किये गये महान् कार्यों का गुणगान किया गया है। ब्रह्मा, सूर्य, वायु का भी पर्याप्त वर्णन किया गया है, यद्यपि वे उपर्युक्त पंच देवों से कम महत्त्व के हैं। कुछ अन्य प्रसंगों का भी समावेश पुराणों में स्थान-स्थान पर संक्षेप या विस्तार से किया गया है। चिकित्साशास्त्र, कला, साहित्य (अलंकार)-शास्त्र, साहित्यिक समालोचना, व्याकरणशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीति-शास्त्र, कर्मकाण्ड, जातियों के सामाजिक कानून, वर्णाश्रम, तीर्थयात्रा, धार्मिक प्रतिज्ञाएँ तथा प्रथाएँ, दातव्य उपहार, सांख्ययोग-दर्शन और वेदान्त के बहुरंगे विस्तृत विवरण भी पुराणों की विषय-सामग्री हैं। हृदय को स्पर्श करने वाली भव्य शैली में उन दृढ़-निश्चयी, निर्भीक महापुरुषों के वर्णन हैं जो विवेक से परिपूरित विद्वत्ता, पराक्रम, नैतिक कठोरता, भगवद्-भक्ति तथा आत्म-त्याग के मूर्तिमान आदर्श थे। ये वर्णन सर्वव्यापक सत्यता का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। पुरुषार्थ-चतुष्टय के रूप में मानव-आचरण और कर्तव्यों का जो वर्गीकरण पुराणों में किया गया है, वह पुरातन भारत की नीतिदर्शनपरक विचारधारा का प्रतिनिधि तत्त्व है। पुरुषार्थ-चतुष्टय ही धर्मशास्त्रों या स्मृतियों के नियमों-सिद्धान्तों की महत्त्वपूर्ण व्यवस्था का आधार बना है।

पुराणों में वर्णित देवता, ऋषि, राजा, सन्त तथा अपने नैतिक आदर्शों के लिए प्रसिद्ध महापुरुष मानवता के लिए जीवन का निर्माण करने वाली शिक्षा के स्रोत हैं। जहाँ तक पुराणों के पात्रों की ऐतिहासिक सत्यता का प्रश्न है, उन पर भी महाकाव्यों के पात्रों की तरह समग्र सृष्टि के सन्दर्भ में विचार किया जाना चाहिए; क्योंकि वे पात्र महाकाव्यों में मुख्य विषयों के अन्तर्गत इंगित विविध प्रसंगों के विस्तार ही हैं।

मुख्य पुराण संख्या में अठारह हैं। इनमें से ब्रह्मा, विष्णु और शिव में से प्रत्येक का गुण-गान करने वाले ६-६ पुराण हैं। बीच-बीच में अन्य देवताओं का भी वर्णन है। दार्शनिक गाम्भीर्य, धार्मिक प्रभावोत्पादकता और मुख्य विषय-सामग्री की दृष्टि से विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवत मुख्य हैं। श्रीमद्भागवत में सांख्य और वेदान्त-दर्शन पर आधारित सृष्टि-रचना; विष्णु के विभिन्न अवतारों

(जो संख्या में बाईस या चौबीस हैं। इनमें दश मुख्य अवतार भी सम्मिलित हैं); देवताओं और दानवों के वंशों; सृष्टिकर्ता की सन्तानों के रूप में क्रम से विभिन्न राजाओं और ऋषियों, ध्रुव, ऋषभदेव, जड़भरत, अजामिल, प्रह्लाद, गजेन्द्र, अम्बरीष, सुदामा जैसे महान् भगवद्-भक्तों; सांख्य, योग और वेदान्त से सम्बन्धित दार्शनिक उपदेशों (विशेष रूप से कपिल द्वारा देवहूति को तथा श्री कृष्ण द्वारा उद्धव को दिये गये उपदेशों); खगोलविज्ञान (गणित ज्योतिष); भूगोल; वर्णाश्रम धर्म; कल्प; युग तथा चारों प्रकार के प्रलयों के वर्णन हैं।

भागवत के सर्वाधिक मनोहर तथा प्रभावशाली अध्याय वे हैं, जिनमें कृष्ण-चरित्र का वर्णन है। यह वर्णन भारत के अनेक भक्ति-सम्प्रदायों का प्रेरणा-स्रोत रहा है। अपने सार्वजनिक जीवन में योद्धा, राजनीतिज्ञ तथा अध्यापक के रूप में कृष्ण ने जो-जो कार्य किये, उनका वर्णन महाभारत में होने के कारण भागवत के इन अध्यायों में नहीं है (यद्यपि महाभारत की कई घटनाओं का उल्लेख है)। वृन्दावन की गोपियों के साथ की गयी कृष्ण की रासलीला, उनकी बाल-क्रीड़ाएँ (जिनका आध्यात्मिक अर्थ भी है), सबको विस्मित कर देने वाले किशोरावस्था में उनके द्वारा किये गये वीरता और पराक्रम के साहसिक कार्य परवर्ती भक्त कवियों द्वारा रचित साहित्य का आधार हैं। आज भी कृष्ण-भक्तों के मनोभावों को कृष्ण की क्रीड़ाएँ, अद्भुत कार्य और लीलाएँ असीमित रूप से प्रभावित कर रही हैं। पुराणों ने महाकाव्यों की सम्मोहक शक्ति और भव्य छवि को अपने में समाहित कर लिया है। वे वेद-उपनिषदों के सफल प्रतिनिधि हैं।

(अनूदित)

जीवन के उपदेश

नित्य चार बजे प्रातः उठ जाइए। ईश्वर के नाम का कीर्तन कीजिए (जैसेह्लह्ल**गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय, राधारमण हरि गोविन्द जय-जय**)। हरि-नाम का गायन करते समय सदा यह अनुभव कीजिए कि हरि आपके हृदय के अन्दर विराजमान हैं और आपका कीर्तन श्रवण कर रहे हैं।

गीता, रामायण, भागवत, विष्णुसहस्रनाम, ललितासहस्रनाम का आधे घण्टे से ले कर एक घण्टे तक नियमित स्वाध्याय कीजिए। अपने माता-पिता की आज्ञा मानिए। सदा सत्य बोलिए। अल्प बोलिए। मधुर बोलिए।

ईश्वरीय ज्योति आपके भीतर अधिकाधिक चमकती रहे! आप धर्म के मार्ग का अनुगमन कर इसी जीवन में भगवान् का साक्षात्कार करें!

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति-कथाएँ ४

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

नाँद में कुत्ता

चारे से भरी नाँद में एक कुत्ता घुस कर बैठ गया। एक बैल चारा खाने आया।

बैल ने कहाह्न ''प्यारे कुत्ते! चारा तुम्हारे काम का नहीं है। मुझे खाने दो।''

कुत्ते ने कहाह्न''चारे का मेरे लिए कोई उपयोग नहीं। मैं उसे खा नहीं सकता हूँ। फिर तुम्हीं क्यों खाओ ?''

कुत्ता बड़ा स्वार्थी था। बहुत से बच्चे, विद्यार्थी और मनुष्य ऐसे हैं जो इस कुत्ते की तरह स्वार्थी होते हैं। वे सब-कुछ अपने ही लिए चाहते हैं। उन्हें दूसरों के हितों का कुछ भी ख्याल नहीं रहता। वह यह नहीं चाहते कि दूसरों को भी लाभ हो। स्वार्थी मनुष्य हमेशा यही समझता है कि एकमात्र वही सही है, बाकी सब गलत हैं।

स्वार्थ छोड़ो। दूसरों के दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न करो। नि:स्वार्थ बनो। दूसरों को सुख देने का प्रयत्न करो। तुम्हारे पास जो-कुछ हो, दूसरे बच्चों को भी बाँटो। दूसरों के हितों का ध्यान रखो। तुम सुखी होओगे। तुम महान् बनोगे।

लोभ छोड़ो

एक बार एक स्त्री की गाड़ी छूट गयी। उसे सारी रात दूसरे दर्जे के वेटिंग रूम में बितानी पड़ी। उसके पास खूब धन और जेवरात थे। स्टेशन-मास्टर का लड़का आया और उस स्त्री को वेटिंग रूम से बाहर निकाल कर स्वयं सोफे पर सो गया। वह स्त्री चुप-चाप इंटर क्लास के वेटिंग रूम में जा कर सोयी।

स्टेशन-मास्टर बड़ा लोभी था। उसने एक चपरासी को भेजा तथा उस स्त्री की हत्या करके सारा धन और जेवर लाने को कहा। चपरासी ने सोफे पर सोये हुए उस लड़के की हत्या कर डाली। लड़का जब चिल्लाया, तो स्टेशन-मास्टर वहाँ दौड़ा आया और देखा कि उसका लड़का खून में लथपथ पड़ा हुआ है। उन लोगों ने शव को उठा कर रेलवे लाइन पर फेंक दिया।

गाड़ी आयी। ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। पुलिस बुलायी गयी। जाँच-पड़ताल की गयी। स्त्री ने सारी कहानी सुनायी। स्टेशन-मास्टर और चपरासी कैद कर लिये गये।

लोभ से विनाश होता है।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

बाल-स्तम्भ :

'धिक्कार है मुझे'

स्वामी रामराज्यम्

यह एक पौराणिक कथा है ।

सूर्यवंश में प्रजाति नाम के एक राजा हुए हैं। उनके पाँच पुत्र थे। उनके बाद परम्परा के अनुसार उनके बड़े पुत्र खनित्र सम्राट् बने। उनसे छोटे चार भाई उनके अधीन रहते हुए अलग-अलग राज्यों के शासक बन कर राज्य करने लगे।

एक छोटे भाई शौरि का मन्त्री था विश्ववेदी। विश्ववेदी बहुत कुटिल व्यक्ति था। उसने शौरि को यह परामर्श दिया कि उसे युद्ध करके बड़े भाई खनित्र से शासनाधिकार छीन लेना चाहिए तथा स्वयं सम्राट् बन जाना चाहिए। प्रारम्भ में शौरि ने इस बात का विरोध किया परन्तु जब बार-बार विश्ववेदी ने शौरि को यही परामर्श दिया तो लोभ में आ कर शौरि उसकी बात से सहमत हो गये। अब विश्ववेदी अन्य चार भाइयों को भी खनित्र के विरुद्ध भड़काने लगा और इस षड़यन्त्र में सफल भी हो गया।

खनित्र के चारों भाई उनसे युद्ध करने के लिए तैयार तो हो गये, लेकिन वह (खनित्र) इतने वीर थे कि उनसे युद्ध में सामना करने का साहस किसी को भी नहीं हो रहा था। तब विश्ववेदी ने चारों भाइयों की ओर से चार पुरोहितों से कुछ मारक मन्त्रों[१] का जप करवाया। परिणामस्वरूप चार कृत्यायें[२] उत्पन्न हो गयीं। विश्ववेदी और चारों पुरोहितों ने कृत्याओं से कहाह्न ''तुम सब खनित्र को मार डालो।'' वे कृत्यायें यह कुकृत्य करने के लिए चल पड़ीं। सम्राट् खनित्र भगवान् के परम भक्त थे। वह सभी प्रकार के दोषों से मुक्त थे। अतः उनके निकट पहुँचने का साहस दूषित मन वाली कृत्यायें नहीं कर सकीं।

यह नियम है कि यदि कृत्यायें अपना कुकृत्य पूरा नहीं कर पाती हैं, तो जो उन्हें ऐसे कर्म करने का आदेश देता है, उसी को मार डालती हैं। इस नियम के अनुसार कृत्याओं ने वापस लौट कर विश्ववेदी और चारों पुरोहितों को मार डाला।

जब सम्राट् खनित्र को यह समाचार मिला कि

१ मारक मन्त्रों का जप करने से शत्रु का अहित होता है।

२ स्त्री-रूप धारण करने वाली ऐसी शक्ति जो शत्रु का नाश कर देती है।

एक साथ विश्ववेदी और चारों पुरोहित मर गये, तब उन्हें बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने अपने कुलपुरोहित वसिष्ठ जी से इस घटना का रहस्य पूछा। वसिष्ठ जी ने ध्यानस्थ हो कर सारा रहस्य जान लिया और सम्राट् खनित्र को पूरी बात बतला दी।

यह सुन कर सम्राट् खनित्र बहुत दुःखी हो गये। बोलेह्न ''मैं पापी नहीं, महापापी हूँ। मेरे ही कारण उन सबकी मृत्यु हुई है। उन बेचारों का क्या दोष था? उन्होंने जो-कुछ किया, मेरे भाइयों के लिए किया। धिक्कार है मुझे। अब मैं राज्य नहीं करूँगा।''

सम्राट् खनित्र राज्यसिंहासन छोड़ कर जंगल में चले गये और तपस्या करने लगे।

बच्चो, अपने कारण यदि किसी का अहित होता होह्न भले ही वह हमारा शत्रु हो, तो हमें दुःखी होना चाहिए और अपने को अपराधी मानना चाहिए। अपने शत्रु में भी हमें कोई दोष नहीं देखना चाहिए। जब हम निर्दोष होंगे, तभी हम दूसरों में बुराई ढूँढ़ने की बुरी आदत से मुक्त हो पायेंगे।

कर्मयोग आनन्द प्रदान करता है

क्या आप अपने छोटे पुत्र के लिए कुछ करते समय उसके बदले में उससे कुछ अपेक्षा रखते हैं? ठीक उसी प्रकार से आपको दूसरों के लिए भी निष्काम भाव से कार्य करना पड़ेगा। आपको विकसित हो कर यह भान करना पड़ेगा कि यह सारा जगत् आपकी आत्मा है।

इससे प्रारम्भ में तो आपको कुछ दुःख उठाना पड़ेगा; क्योंकि अब तक आपने निष्काम भाव से कभी भी सेवा नहीं की है। यदि आप अल्प मात्र भी निष्काम सेवा का आनन्द प्राप्त कर लेंगे, तो आप फिर उसको छोड़ नहीं सकते। सेवा की शक्ति आपको उत्साह तथा स्फूर्ति के साथ अधिकाधिक काम करने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

आप यह अनुभव करने लगेंगे कि यह सारा जगत् ही ईश्वर की अभिव्यक्ति है। आपको अत्यन्त आन्तरिक शक्ति तथा हृदय की शुद्धता प्राप्त होगी। आपका हृदय सहानुभूति, करुणा तथा शुद्ध प्रेम से परिप्लावित हो जायेगा। निष्काम सेवा तथा आत्म-त्याग से आपकी चेतना अविराम असीमता की ओर विकसित होगी।

स्वामी शिवानन्द

श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की हार्दिक इच्छा

श्री गुरुदेव द्वारा रचित विश्व-प्रार्थना प्रसन्नता, समृद्धि और सफलता का एक अचूक फार्मूला हैह्नह्नइस रूप में मैं इस प्रार्थना की सराहना तथा अनुशंसा करता हूँ। इस महती प्रार्थना का फल है शान्ति और उन्नति। इस असाधारण प्रार्थना में समस्त धर्मग्रन्थों तथा सन्तों-महापुरुषों के उपदेशों का सार निहित है। यह प्रार्थना आपके अस्तित्व का एक अनिवार्य अंग है। प्रिय मित्रो! पूरी तत्परता तथा उत्साह के साथ इस प्रार्थना को अपने आचरण में उतारिए। इस वर्ष इस प्रार्थना का व्यापक प्रचार-प्रसार कीजिए। इसका मूल्य अकूत है। इसकी प्रत्येक पंक्ति का मूल्य स्वर्ण-राशि से भी अधिक है। मेरी आप सबसे विनती है कि आप इसे पढ़िए तथा मुद्रित कराने का प्रयास कीजिए। किसी भी आकार तथा गुणवत्ता वाले कागज पर इसे मुद्रित कराया जा सकता है। इसे अधिकाधिक लोगों के बीच अधिकाधिक संख्या में निःशुल्क वितरित कीजिए। इसे कागज के एक ओर ही मुद्रित कराइए ताकि इसे बोर्ड पर चिपकाया जा सके या फ्रेम कराया (चौखट में जड़ा) जा सके। अपनी क्षेत्रिय भाषा में इसका अनुवाद कराइए। मासिक या साप्ताहिक पत्रिकाओं या दैनिक समाचार-पत्रों में इसे प्रकाशित कराइए। विद्यालयों, क्लबों तथा व्यक्तियों के समूहों में जा कर इसके विषय में बताइए। इस प्रार्थना का किसी देश-विशेष से सम्बन्ध नहीं है। यह सर्वदेशीय है तथा समग्र संसार की सम्पत्ति है। यह सभी धर्मों से परे है। समस्त संसार की रक्षा करने में समर्थ यह प्रार्थना घर-घर पहुँचायी जानी चाहिए। पूरे संसार में इस प्रार्थना का प्रचार किया जाना चाहिए। अपने बच्चों को इस प्रार्थना की जानकारी दीजिए और इसे पढ़ाइए। प्रातः-सायं इस प्रार्थना का पाठ कीजिए। **इस वर्ष को प्रार्थना-वर्ष बनाइए।** इस प्रार्थना से सभी का कल्याण होगा।

पत्रिका के इस अंक में इस प्रार्थना को मैंने अगले पृष्ठ पर मुद्रित कराया है। इस पृष्ठ पर रेखाएँ बनी हुई हैं । सावधानीपूर्वक इन रेखाओं के ऊपर से काट कर आप इस पृष्ठ को अलग कर सकते हैं। नव-वर्ष के अवसर पर हिमालय के सद्गुरुदेव स्वामी शिवानन्द जी महाराज द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट उपहार के रूप में इस प्रार्थना को सँभाल कर रखिए। इस प्रार्थना से आपका घर धन्य हो जायेगा। यह प्रार्थना आपको दिव्य पूर्णता की ओर ले जायेगी। यह आपके लिए दिव्य जीवन का मार्ग प्रशस्त करेगी। भगवान् की कृपा आप पर हो!

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव के अन्तर की गहनता से निःसृत आशीर्वादों के फलस्वरूप, दिव्य जीवन संघ, मुख्यालय, लक्ष्मणझूला के समीप तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' द्वारा निज नम्र सेवा अर्पित करता है। वह, जो निराश्रय लोग अस्वस्थ हैं तथा अस्पताल में भर्ती हो कर उपचार और स्नेहमय देखभाल की आवश्यकता में हैं उन्हें चिकित्सामय सुविधा तथा उपचार प्रदान करता है।

यह जानना प्रायः रसप्रद होता है कि भिन्न-भिन्न लोग अपने रोग, हानि-क्षति, अक्षमताएँ और दर्द के निर्वाह, व्यवहार हेतु कितनी भिन्न-भिन्न पद्धतियों का उपयोग करते हैं। यह जानना तो अधिक ही रसप्रद होता है कि हम अपनी शारीरिक पीड़ा, असुविधा, चोट अथवा प्रतिकूलता किस तरह निभाते हैं। पश्चात्, एकाएक एक विचार : मैं यह शरीर, मन नहीं हूँ, अमर आत्मा हूँ मैं, विलीन होता दिखता है। 'होम' के स्त्री-विभागों में से एक विभाग में निम्नानुसार वार्तालाप सुनायी दियाह्न ''मैं त्रिवेणी घाट जा रही हूँ! कौन मेरे साथ आ रहे हैं?'' एक वयस्क, मानसिक रूप से समस्यात्मक, दमा-श्वास रोग से पीड़ित स्त्री, शब्दों के उच्चारण के मध्य श्वास लेने के लिए हाँफती, पूछ रही है।

''मैं आपके साथ आ रही हूँ'', एक तरुणी, जिसके दोनों पैर पक्षाघातग्रस्त हैं, उत्तर दे रही थी। ''ऊँह! तुम तो बिलकुल चल ही नहीं सकती। तुम ज़मीन पर एक कदम भी नहीं रख सकती, तुम मेरे साथ कैसे आओगी?'' उपहाससूचक और कठोर प्रत्युत्तर!

''आप मेरे विषय में जानती ही क्या हो?''ह्न ह्नयुवती का दृढ़ उत्तर! और वह कह रही है, ''रात्रि में जब आप खर्राटे लेती हैं, तब मैं अपनी शय्या पर से नीचे उतरती हूँ और आसपास, हर जगह घूमती हूँ एवं सूर्योदय होता है तब मैं पुनः अपनी शय्या पर होती हूँ....मेरे पैर हलन-चलन करने का अस्वीकार करते हैं। अतः हम दोनों, रात्रि को त्रिवेणी घाट पर घूमने जायेंगे तथा यह भी देखते हैं, कौन प्रथम पहुँचती है?''

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें। रोगियों की सेवा करें। यही दिव्य जीवन है।'' स्वामी शिवानन्द

देहरादून में अन्तर्शालेय निबन्ध-स्पर्धा

दिव्य जीवन संघ के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में, देहरादून में दिनांक १५ नवम्बर २०१० को एक अन्तर्शालेय निबन्ध-स्पर्धा सम्पन्न हुई। निबन्ध का विषय था, "Crisis of character in the country, ways and means to cure this chronic malady" (''राष्ट्र में चरित्र आपद्काल मेंह्वह्वइस चिरकालिक व्याधि के उपचार के उपाय और साधन।'') इस प्रतियोगिता में विविध शालाओं के अनेक बालकों ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता का पुरस्कार-वितरण समारोह, देहरादून में, शान्ति-निवास में, दिनांक ५ दिसम्बर २०१० को आयोजित हुआ। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने उत्सव का मंगल प्रारम्भ, ''जय गणेश'' कीर्तन से किया। तदनन्तर ब्रिगेडियर सब्बरवाल जी ने सबका सुस्वागत किया। उनके स्वागत-सम्बोधन में उन्होंने कहा कि निबन्ध-लेखन उचित और सुन्दर स्तर के हों, इस उद्देश्य से बालकों ने प्रयास किये हैं। कुछेक ने समस्या तथा उसके समाधान की विस्तृत रूप से चर्चा की है। ब्रिगेडियर जी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी दिनप्रतिदिन निम्नकोटिकृत हो रही है और इस प्रतियोगिता के परिचालन में मुख्य उद्देश्य तो उस पीढ़ी में हमारी संस्कृति तथा परम्परा विषयक जागरूकता लाना है, जिससे उनसे अभिज्ञ होते होते वे पले

और विकास करे। उन्होंने बालकों को महात्मा गान्धी जी के उद्धरण-अवतरण का निर्देश किया, ''विश्व में जो परिवर्तन आप देखना चाहते हैं, उसका जीवन्त उदाहरण स्वयं बनें'' तथा स्वदेश-विरासत और परम्परा का महान् मूल्य वे समझें। अधिक में उन्होंने बालकों को सन्तों और ऋषियों के धार्मिक पुस्तकों के पठन के लिए प्रोत्साहित किया जो उनमें सद्गुणों का विकास करने में तथा स्वयं के जीवन में कुछ सिद्धान्तों को आचरित करने में सहायभूत हों।

पश्चात् श्रीमती लीला खेरा जी ने अपनी समृद्ध और मधुर आवाज़ में दो भजन प्रस्तुत किये। परमाध्यक्ष स्वामी जी महाराज ने उनका सन्मान किया।

अन्त में, परमाध्यक्ष स्वामी जी महाराज ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की उज्ज्वल जीवन-गाथा द्वारा सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने बालकों को गुरुदेव की तपश्चर्या की तीव्र और कठोर समयावधि और ईश्वर-साक्षात्कार की प्राप्ति विषयक समझाया। गुरुदेव की, अपनी तपस्या द्वारा प्राप्त उनका सुख और परमानन्द को अन्योन्य में बाँटने की इच्छा के फलस्वरूप, वर्ष १९३६ में दिव्य जीवन संघ की स्थापना करने को उन्हें विवश किया। श्री गुरुदेव के बहुमुखी, विशाल और महान् व्यक्तित्व ने भारत तथा विदेशों के सहस्रों भक्तों को आकर्षित किया। गुरुदेव के उपदेश सरल और आसान होने से सब ग्रहण करते थे। आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार और जरूरतमन्दों की सेवा, गुरुदेव को अति प्रिय थे। उनके जीवन-काल में भारत के तीन राष्ट्रपति, गुरुदेव की वन्दना करने ऋषिकेश में आये। इन सबके बावजूद भी गुरुदेव सदैव नम्र और सादगीपूर्ण रहे। परमाध्यक्ष स्वामी जी महाराज ने गुरुदेव के बालकों को उपदेश का पठन किया। इस प्रकार स्वामी जी महाराज ने सद्गुरुदेव के सद्गुणों को अपनाने, बालकों को प्रेरित किया।

निम्नांकित बालकों ने पारितोषिक पाये :

(१) प्रथम पारितोषिक	**आरुषी मित्तल**	ब्राईट लेन्डस् स्कूल
(२) द्वितीय पारितोषिक	**शिखा चौधरी**	ब्राईट लेन्डस् स्कूल
(३) तृतीय पारितोषिक	**आकाशदीप रावत**	कर्नल ब्राउन केम्ब्रीज स्कूल

आश्वासन पारितोषिक

(१) वेल्हेम गर्ल्स स्कूल के **साई संगीत जैन**

(२) हिम ज्योति स्कूल की **शालिनी राय**

उत्सव के समापन पूर्व उत्तराखण्ड के भूतपूर्व गर्वनर हिज एक्झेलन्सी (His Excellency) श्री सुदर्शन अग्रवाल जी का सन्देश पढ़ा गया। सन्देश में कहा गया कि दिव्य जीवन संघ, जनसमाज को आध्यात्मिक मूल्यों और नीतिमत्ता का उपदेश प्रदान कर, सेवा कर रहा है और अपने कौशल्यों को विकसित करने, बालकों को इस अवसर का कैसे उपयोग करना चाहिए। उत्तरार्ध प्रार्थनाएँ और उनके पश्चात् आरती और प्रसाद-वितरण से समारोह का समापन हुआ।

महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ का ६७ वाँ महोत्सव

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।

दिव्य नाम के कीर्तन के महत्त्व की स्तुति में, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज कहते हैंह्न

''कीर्तन अमृत है। कीर्तन आत्मा का दिव्य आहार है। कीर्तन आपको अमर कर सकता है। महामन्त्र का गान करो :

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।''

पूज्य गुरुदेव द्वारा दिनांक ३ दिसम्बर १९४३ में आरम्भित महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ, विश्व-शान्ति हेतु जो गत ६७ वर्षों पर्यन्त, भजन हॉल में, रात-दिन और वर्ष के सब दिनों को निरन्तर सम्पन्न किया जा रहा है, उसका सातत्य सदैव है। पवित्र यज्ञ का ६७ वाँ धन्य वार्षिक दिन, दिनांक ३ दिसम्बर २०१० को महान् पावित्र्य और आध्यात्मिक प्रफुल्लता से मनाया गया।

उत्सव के मंगलाचरण के रूप में, दिनांक २७ नवम्बर से दिनांक २ दिसम्बर पर्यन्त, दैनिक तीन घण्टोंपर्यन्त, पावनतम महामन्त्र का सामूहिक कीर्तन किया गया। दिनांक ३ दिसम्बर के पुनीत दिवस को, दिव्य नाम मन्दिर में प्रभात में ९ से ले कर ११ बजे पर्यन्त विशेष सत्संग और पूजा का परिचालन हुआ। इस सम्मान्य दिन को विश्व-शान्ति तथा विश्व-कल्याण के लिए आश्रम-यज्ञशाला में हवन किया गया।

अपराह्न में ३-३० को भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण और सद्गुरुदेव के चित्रों सहित सुशोभित पालकी युक्त शोभायात्रा आरम्भित हुई। शोभायात्रा धीरे-धीरे कैलासगेट की ओर बढ़ी। महामन्त्रयुक्त ध्वज और भित्तिपत्रकों एवं महामन्त्र के जीवन्त तथा भावपूर्ण गान ने मुनिकीरेती के समग्र वातावरण को दिव्यता से स्पन्दित किया। पश्चात् भगवान् श्री राम और भगवान् श्री कृष्ण के अष्टोत्तरशत नामावली युक्त पुष्पों से अर्चना की गयी। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के आशीर्वचनोंयुक्त सन्देश और पावन प्रसाद-वितरण से कार्यक्रम का समापन हुआ।

रात्रि-सत्संग में, नियमित स्तोत्र-पाठ और प्रार्थनाओं के आधिक्य में, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने निज प्रेरक प्रवचन से भक्तों को आशीर्वादित किये।

भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण और सद्गुरुदेव, दिव्य नाम की सतत स्मृति-गान से हम सबको कृपान्वित करें!

निःश्वासे न हि विश्वासः कदा रुद्धो भविष्यति।
कीर्तनीयमतो बाल्याद्धरेर्नामैव केवलम्।।

* * *

मुख्यालय आश्रम में गीता–जयन्ती समारोह

संसारसागरं घोरं तर्तुमिच्छति यो जनः।
गीतानावं समारुह्य पारं याति सुखेन सः ।।

(जो भयजनक संसार–भवसागर को पार करना चाहते हैं, वे गीता–नाव पर आरूढ़ हो कर सरलता से उस पार पहुँचते हैं।)

''गीता दिव्य अमृत है। जो कोई विशुद्ध हृदय और ध्यान द्वारा गीतामृत का पान करता है, वह अमरत्व, शाश्वत आनन्द, चिरकालिक शान्ति और नित्य आनन्द प्राप्त करता है।''

(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

भव्य शास्त्र, 'श्रीमद् भगवद् गीता' के उद्भव का धन्य दिवस, आश्रम में महान् पवित्रता और श्रद्धा–भक्तिपूर्वक दिनांक १७ दिसम्बर, २०१० को मनाया गया। पावन समाधि–मन्दिर में प्रभात में ९–०० से ले कर ११–३० पर्यन्त एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ। उसमें संन्यासी–गण, ब्रह्मचारी–वर्ग और अभ्यागतों द्वारा दिव्य गान के समस्त अठारह अध्यायों का पाठ किया गया। पश्चात् अष्टोत्तरशतनामावली से श्रीकृष्ण भगवान् की पुष्पार्चना की गयी। सत्संग का समापन आरती तथा पावन प्रसाद वितरण से हुआ। इस शुभ दिन को यज्ञशाला में गीता के श्लोकों के पठन से विश्व–शान्ति हेतु गीता–यज्ञ भी सम्पन्न हुआ।

रात्रि–सत्संग में, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के गीता–जयन्ती के प्रेरक और हृदयस्पर्शी सन्देश का पठन किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने भी सम्मिलित भक्तों को इस दिव्य शास्त्र की अनिर्वचनीय महिमा से ज्ञात किया। आरती और प्रसाद–वितरण से सत्संग का समापन हुआ।

श्रीकृष्ण भगवान् और सद्गुरुदेव हमें गीता के सारतत्त्व को जीने के लिए आशीर्वादित करें!

मुख्यालय आश्रम में श्री दत्तात्रेय–जयन्ती समारोह

आदौ ब्रह्मा मध्ये विष्णुरन्ते देवः सदाशिवः।
मूर्तित्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते।।

दिव्य त्रिमूर्ति अवतारह्रह्रदत्तात्रेय भगवान् का जन्म–महोत्सव, मुख्यालय आश्रम में, दिनांक २० दिसम्बर को अति पावनता और भक्ति से मनाया गया। दत्तात्रेय–टेकरी पर प्रभात में ९–०० से ले कर ११–३० पर्यन्त विशेष सत्संग आयोजित हुआ और उसमें वेद के श्लोकों–सूक्तों द्वारा, सुशोभित दत्तात्रेय मन्दिर में प्रतिष्ठित भगवान् की मूर्ति को अभिषेक–अर्चना अर्पित हुए। साथ–साथ, अवधूत गुरु के महिमासूचक सुमधुर और आत्मोन्नतिपूर्ण भजन–कीर्तन के गान ने भक्तों के हृदय अवर्णनीय शान्ति तथा परमानन्द से परिपूर्ण किये। आरती और पावन प्रसाद–वितरण से सत्संग का समापन हुआ।

रात्रि–सत्संग में, आश्रम के पुराने अन्तेवासी श्री हरिहर सिंह जी ने दत्रात्रेय भगवान् का महान् जीवन चरित्र और उनके चौबीस गुरुओं के विषयक प्रवचन दिया।

श्री दत्तात्रेय भगवान् और सद्गुरुदेव के दिव्य अनुग्रह हम सबको इसी जन्म में ईश्वर–साक्षात्कार हेतु सच्चाईपूर्वक प्रयास करने की प्रेरणा दें!

श्री श्री विश्वनाथ मन्दिर का प्रतिष्ठा महोत्सव

''भगवान् शिवजी प्रेम के देवता हैं। उनकी कृपा अपार है। 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का जप करो। वे आपको अपने दर्शन दे कर कृतार्थ करेंगे।''

(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

भगवान् श्री श्री विश्वनाथ, सद्गुरुदेव के पावन आश्रम के अधिष्ठाता हैं। श्री श्री विश्वनाथ भगवान् तथा श्री श्री विश्वनाथ भगवान् के मन्दिर के अन्य देव-देवियों की मूर्तियाँ दिनांक ३१ दिसम्बर, १९४३ को परम पूजनीय सद्गुरुदेव के पवित्र करकमलों द्वारा प्रतिष्ठित की गयी थीं। श्री श्री विश्वनाथ मन्दिर का ६७ वाँ प्रतिष्ठा-वार्षिक दिन, दिनांक ३१ दिसम्बर को महान् भक्ति तथा गहन आदर के साथ मनाया गया।

महोत्सव के पूर्व, पुनीत पंचाक्षरी मन्त्र का कीर्तन, मन्दिर में दिनांक २७ से दिनांक २९ नवम्बर पर्यन्त, अपराह्न में तीन घण्टों पर्यन्त परिचालित किया गया। पावन मन्त्र का अखण्ड कीर्तन, उसके अगले दिन प्रातः ७-०० बजे से सायंकाल में ७-०० पर्यन्त परिचालित किया गया। दिनांक ३१ दिसम्बर के शुभ दिवस को अभिषेक, अलंकार और वेदमन्त्रोंयुक्त लक्षार्चना से भगवान् श्री श्री विश्वनाथ की भव्य पूजा की गयी। श्री विश्वनाथ मन्दिर का गर्भ-गृह अति सुन्दर सजाया गया था। सब संन्यासी गण, ब्रह्मचारी गण, साधक और आश्रम में पधारे अभ्यागतों ने अभिषेक और अर्चना में व्यक्तिगत रूप से भाग लिया। साथ-साथ पंचाक्षरी मन्त्र के कीर्तन और मन को तल्लीन बनाते शिव-स्तोत्रों के गान ने भक्तों के हृदयों को दिव्यता में विभोर किये। मध्याह्न को महाभोग के अर्पण, मंगलारती तथा पवित्र प्रसाद-वितरण के साथ महोत्सव का समापन किया गया। इस पवित्र दिवस को विश्व-शान्ति और विश्व-कल्याण के लिए हवन भी सम्पन्न हुआ।

भगवान् श्री श्री विश्वनाथ और सद्गुरुदेव के विपुल आशीर्वाद की वर्षा सब पर हो!

मुख्यालय आश्रम में नूतन वर्ष का महोत्सव

''नूतन वर्ष को दिव्यतापूर्वक जीने वाले ३६५ आदर्श स्वर्णिम दिनों से परिपूर्ण कर दो। वे ३६५ दिन सत्य, करुणा, दया, शुचिता और उमदा विचार, वाणी और कर्म से भरे हों।''

(परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज)

गत वर्षों के समान, मुख्यालय आश्रम में नूतन वर्ष का प्रारम्भ, महान् आध्यात्मिक जोश और आनन्द से, दिनांक ३१ दिसम्बर की रात्रि को मनाया गया। उत्सव का शुभारम्भ रात्रि को ७-३० को प्रार्थना-स्तोत्रों के पाठ से हुआ। साउथ अफ्रीका, हरिद्वार और आश्रम के भक्तों ने निज सुरीले और सुमधुर तथा आत्मोन्नत भजनों और कीर्तनों द्वारा सद्गुरुदेव के चरणकमलों में पुष्पांजलि अर्पित की।

परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज और परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने, निज प्रेरक प्रवचनों से भक्तों को आशीर्वादित किये।

भक्तों का यह दिव्य विशेषाधिकार था कि परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के दर्शन और उनके हृदयस्पर्शी नूतन वर्ष का सन्देश दृश्य-श्राव्य कैसेटह्लह्लइलेक्ट्रोनिक माध्यमह्लह्लद्वारा प्राप्त हुए। तदनन्तर, वर्ष २०१० को विदाई देते मूक ध्यान, मध्य रात्रि के १२-०० के समय तक किया गया और नूतन वर्ष २०११ के आगमन का सुस्वागत किया गया। उत्सव का समापन आरती और पावन विशेष प्रसाद से किया गया।

परम कृपालु, सर्वेश्वर परमात्मा और सद्गुरुदेव के आशीर्वाद हमें इस नूतन वर्ष को दिव्यता से परिपूर्ण करने में सक्षम करें!

* * *

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव, ने दिव्य जीवन संघ, लंडन के परमाध्यक्ष श्री अनिल मेहता जी के प्रेमभरे आमन्त्रण से, दिनांक १० से दिनांक २१ दिसम्बर, २०१० की समयावधि में, लंडन (यु. के.) की सांस्कृतिक यात्रा सम्पन्न की।

स्वामी जी महाराज का, दिनांक १० दिसम्बर, २०१० को, लंडन हिथ्रो हवाई मथक पर, श्री अनिल जी, राजेश्वरी जी, उनकी सुपुत्री शारदा जी और श्री हितेश पंचाल जी ने, स्नेहपूर्ण स्वागत किया।

श्री स्वामी जी, उनकी समग्र यात्रावधि में मेहता-परिवार के साथ रहे। उनका मुख्य निवास-स्थान, शारदा मेहता जी के नूतन ही खरीदे फ्लैट था और वह दिव्य जीवन संघ के केन्द्र से, थोड़ी मिनट ही चलने की दूरी पर है। स्वामी जी महाराज को शान्ति और स्व-कार्य हेतु समय तथा एकान्त मिले इसलिए यह व्यवस्था की गयी।

दिव्य जीवन संघ, लंडन शाखा ने भक्तों के लिए अधिकतम सन्ध्याओं को सत्संग आयोजित किये। सब सत्संगों का प्रारम्भ, दिव्य जीवन संघ की पूर्वार्ध प्रार्थनाओं से और उनकी सम्पन्नता अनिल मेहता जी और अन्य भक्तों तथा बालकों के भजनों से होती थी। तत्पश्चात् भक्तों द्वारा पूछे हुए विषयों पर पारस्परिक प्रतिभागिता और चर्चाएँ होती थीं। सत्संग के समापन में 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र की एक माला, श्री हनुमान चालीसा, दिव्य जीवन संघ की आरती, उत्तरार्ध प्रार्थना और समापन प्रार्थनाएँ और शान्ति-मन्त्र के पाठ होते थे। तदनन्तर, प्रसाद-वितरण होता था।

श्री स्वामी जी ने दिनांक ११ दिसम्बर, शनिवार के प्रभात से अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारम्भ, उनके निवासस्थान, शारदा जी के उस नूतन फ्लैट में पादुका-पूजा और प्रार्थनाओं से किया। सायंकाल में, मॉर्डन-सरे में, श्री जयन्तभाई और श्रीमती मीना मेहता जी के गृह में दिव्य जीवन संघ का पारस्परिक सत्संग सम्पन्न हुआ। अनेक भक्त उपस्थित रहे और स्वामी जी ने 'भगवद्गीता' विषयक वक्तव्य दिया और भक्तों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

रविवार, दिनांक १२ दिसम्बर की सन्ध्या को, स्वामी जी, उक्सब्रिज में श्री हर्षद जी और श्रीमती शोभा पारेख जी के निवासस्थान में सम्पन्न सत्संग में

उपस्थित रहे। उपस्थित भक्तों ने सत्संग की पारस्परिक प्रक्रिया और रूपरेखा का आनन्द उठाया और स्वामी जी ने भक्तों के अनेक प्रश्नों के उत्तर दिये।

सोमवार के सायंकाल दिनांक १३ दिसम्बर को, स्वामी जी महाराज को बोचासणवासी श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामी नारायण संस्था (BAPS) के वर्तमान परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री प्रमुख स्वामी जी के ९० वें जन्मदिन-महोत्सव में उपस्थित रहने के लिए आमन्त्रित किये गये। यह उत्सव नेस्डन-लन्दन स्थित पावन श्री स्वामी नारायण मन्दिर में आयोजित था। स्वामी जी महाराज का उष्मापूर्ण स्वागत मन्दिर के वरिष्ठ स्वामी जी, श्री योगविवेक स्वामी जी महाराज ने किया। स्वामी जी मन्दिर की सायंकाल की ७-०० की आरती में उपस्थित रहे। पश्चात् स्वामी जी को प्रेक्षणीय मन्दिर, मार्गदर्शन कराते, दिखाया गया। उसके बाद स्वामी जी ने मन्दिर के आदरणीय स्वामीजी-गण के साथ महाप्रसाद ग्रहण किया और मुख्य कार्यक्रम में निज उपस्थिति दी।

पूज्य श्री योगविवेक स्वामी जी ने श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज का पुष्पमाला से स्वागत किया, एकत्रित भक्तों को उनका परिचय दिया तथा परम पूज्य श्री प्रमुख स्वामी जी महाराज और परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के निकट परिचय और उनकी आध्यात्मिक सम्बद्धता विषयक भक्तों को ज्ञात किया। श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने अपने सद्गुरु के जन्मदिन के उत्सव मनाने के महत्त्व को संक्षेप में कहा। उन्होंने कहा कि शिष्य के आचरण और व्यवहार द्वारा गुरु के सदैव अस्तित्व और परिचय मिलने चाहिए। केवल मात्र वही आध्यात्मिक मार्ग के द्वार खोल देंगे।

दिनांक १४ दिसम्बर, मंगलवार को, स्वामी जी श्री हितेश पंचाल जी और उनके परिवार के वहाँ पधारे और सत्संग द्वारा उन्हें आशीर्वादित किये।

दिनांक १५ दिसम्बर, बुधवार को स्वामी जी ब्रिस्टोल गये और श्री चार्ल्स और श्रीमती हेलेना कंगाई के निवासस्थान में, अनेक एकत्रित भक्तों के साथ सत्संग सम्पन्न किया।

दिनांक १६ दिसम्बर, गुरुवार की सन्ध्या को, लंडन शाखा ने अन्य एक सत्संग आयोजित किया।

दिनांक १७ दिसम्बर, शुक्रवार को, स्वामी जी को नॉर्थ लंडन के एजवेअर स्थान में एक योग-ग्रुप (Art of Living) द्वारा आमन्त्रित किये गये, जहाँ सत्य के स्वरूप में गहन जिज्ञासा-रूपी 'अष्टावक्र गीता' विषयक यजमान-परिवार के सदस्यों के साथ पारस्परिक सत्संग सम्पन्न हुआ।

दिनांक १८ दिसम्बर, शनिवार को स्वामी जी, श्री अनिल मेहता जी और श्री राजेश्वरी मेहता जी के परिवार के लिए ही आयोजित सत्संग में उपस्थित रहे। बालकों द्वारा यह सत्संग परिचालित हुआ। अपराह्न में अनपेक्षित ही भारी हिमवर्षा हुई और उद्यान में बर्फ में खेलते बालकों के साथ स्वामी जी भी शामिल हुए।

दिनांक १९ दिसम्बर, रविवार को, स्वामी जी ने शारदा के, श्री धीरजलाल और श्रीमती दक्षा बहन पंचाल के सुपुत्र हितेश के साथ आयोजित वाग्दान समारम्भ में निज पावन उपस्थिति दी। स्वामी जी की उपस्थिति से समग्र विधि में आध्यात्मिक ऊर्जा व्याप्त थी। स्वामी जी ने युगल को विवाहबन्धन का महत्त्व

समझाते हुए, संक्षिप्त वक्तव्य दे कर, वेदों के मन्त्रों के पाठ से शारदा मेहता और हितेश पंचाल को आशीर्वाद दिये।

दिनांक २० दिसम्बर, सोमवार को, स्वामी जी श्री श्री आनन्दमयी माँ के उत्साही और तीव्र भक्तों, श्री क्रीस और झरीन पेगिअर के निवासस्थान पधारे। मध्याह्न-भोजन पश्चात्, सरे में स्थित मैडनहेड में रामकृष्ण मिशन की उन्होंने मुलाकात ली। केन्द्र के प्रमुख स्वामी जी ने उनका स्वागत किया। श्री स्वामी जी ने, भारत में रामकृष्ण मिशन के साथ उनके अनुभवों की स्मृतियों विषयक कहा।

उनकी लंडन (यु.के.) की यात्रा के दौरान, श्री स्वामी जी अनेक भक्तों से मिले और भक्तों की आध्यात्मिक ज्ञानविषयक तीव्र पिपासा देख कर अति प्रसन्न हुए। अनेक सत्संग तथा प्रश्न-उत्तर सत्रों ने भक्तों को महान् जिज्ञासा, आनन्द तथा शान्ति का अनुभव हुआ।

दिनांक २१ दिसम्बर, मंगलवार को स्वामी जी ने भारत लौटने के लिए प्रस्थान किया और दिव्य जीवन संघ मुख्यालय में दिनांक २२ दिसम्बर को सुरक्षित पहुँचे।

दिव्य जीवन संघ की पटियाला शाखा में दो दिवसीय परिषद्

दिव्य जीवन संघ की पटियाला शाखा ने दिनांक २० और २१ नवम्बर १०१० को पटियाला के वीर हकीकत राय सिनियर सेकेण्डरी स्कूल में दो दिवसीय आध्यात्मिक परिषद् आयोजित की थी। उन्होंने दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के अमृत महोत्सव की संयुक्तता में यह परिषद् आयोजित की। परिषद् का मुख्य विषय था : 'युवा-जागृति'।

उभय दिवसों में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, श्रद्धेय श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज और श्रद्धेय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने श्रोतागण को प्रवचन दिये। तदुपरान्त, इस अवसर पर अन्य बहुत महानुभावों ने स्व-वक्तव्य किया।

परिषद् में, न ही केवल स्थानिक जन किन्तु पंजाब, हरियाणा के भिन्न स्थानों से आये हुए प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। समीपवर्ती महाविद्यालयों (कॉलेजों) के छात्रों ने इस परिषद् में भाग लिया। उन्होंने निज शंकाओं की स्पष्टता हेतु अनेक प्रश्न पूछे। इन उभय दिनों को सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

दिव्य जीवन संघ की पटियाला शाखा के अध्यक्ष श्री चमन कालिया जी, सचिव श्री सुरेन्द्र गर्ग जी तथा अन्य अनेक सदस्यों ने पटियाला शाखा द्वारा प्रथम ही आयोजित इस परिषद् के परिचालन में कठिन प्रयास किये, जिनसे परिषद् एक भव्य सफलता में परिणत हुई।

''आदि और अन्त तो केवल भ्रम है। आत्मा का न आदि है, न अन्त।'' **स्वामी शिवानन्द**

द डिवाइन लाइफ सोसायटी की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

आगरा (उत्तर प्रदेश) : माह नवम्बर २०१० में शाखा के सत्संग प्रति रविवार को, हवन प्रति मंगलवार को और दैनिक योगासन-सभाएँह्वनियमित गतिविधियों के रूप में और दीपावली-पर्व में स्नेह-सम्मेलन और कन्याओं के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में दो दिवसीय योगासन-प्रशिक्षण विशेष गतिविधियों के रूप में सुचारु रूप से आयोजित हुए।

अहिवारा (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा दैनिक सत्संग और प्रति एकादशी को महामृत्युंजय-मन्त्र का सामूहिक जप के अतिरिक्त दीपावली-पर्व में विशेष पूजा तथा पंचमी को १०८ प्रज्वलित दीपों का सुशोभन सम्पन्न किये गये।

अहमदाबाद, उस्मानपुरा (गुजरात): शाखा की मुख्य गतिविधियों में दैनिक योगासन-वर्ग और मासिक पादुका-पूजा थी।

अम्बाला (पंजाब): शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति मंगलवार को भगवान् श्री हनुमान जी के स्तोत्रों के पाठ के आधिक्य में, दिनांक २६ नवम्बर को विशेष सत्संग एवं समीपवर्ती ग्राम में १०० फल-वृक्षारोपण किये गये। होमियोपैथिक सेवाएँ चलती रहीं।

आस्का (उड़ीसा): प्रति रविवार और गुरुवार शाखा के साप्ताहिक द्विवार सत्संग, पादुका-पूजा सहित साधना-दिन को, एक आध्यात्मिक प्रवचन और स्वाध्याय दिनांक ३१ अक्तूबर कोह्वइनके अतिरिक्त, दिनांक १० अक्तूबर को निःशुल्क मेडिकल कैम्प सम्पन्न हुए।

वाबनपुर (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्वप्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, संक्रान्ति-दिन को श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन सहित चल-सत्संग और दिनांक २८ नवम्बर को अधिक एक चल-सत्संग पूर्ण किये गये। विशेष गतिविधियाँह्वदिनांक १७ से दिनांक २१ नवम्बर पर्यन्त, ''श्री रामचरित मानस महायज्ञ'' तथा माह अक्तूबर में चार चल-सत्संग किये गये।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा के दैनिक द्विवार पूजा तथा पश्चात् स्तोत्र-पाठ, प्रति सायंकाल श्रीमद् भागवत का स्वाध्याय, प्रति गुरुवार पादुका-पूजा और सत्संग तथा शिवानन्द-दिन को पादुका-पूजा आदि चलते रहे।

बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा): शाखा ने सोसायटी के अमृत-महोत्सव अन्तर्गत आयोजित, दिनांक २७, २८, २९ नवम्बर के सघन कार्यक्रमों में, दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, संकीर्तन-यात्रा, पादुका-पूजा और सान्ध्य-सत्संग के आधिक्य में २५० छात्रों की प्रतिभागितायुक्त ''युवा कैम्प''; ३ दिवसीय साधना-शिविर; २४ घण्टों का अखण्ड कीर्तन; श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण और कथा; निराश्रितों को वस्त्र तथा कैश का, निर्धन मरीजों को निःशुल्क दवाइयों का और छात्रों को ज्ञान-प्रसाद का वितरण, ''द डिवाइन लाइफ सोसायटी'' विषयक प्रवचन तथा समीपवर्ती ग्रामों में स्वच्छता-अभियान की गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं। इन सब गतिविधियों में ७ ग्रामों के सत्संग-केन्द्रों के भक्तगण शामिल हुए।

बलांगीर (उड़ीसा): शाखा प्रति शनिवार सत्संग तथा 'शिवानन्द-दिन' को पादुका-पूजा परिचालित करती है। दिनांक २६ से दिनांक ३० अक्तूबर पर्यन्त ५ दिवसीय प्रवचन, श्री रामायण विषयक आयोजित किये गये। 'स्वामी चिदानन्द हेल्थ सेन्टर' ने ऐलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक और औषधियाँ एवं एक्युप्रेशर के निःशुल्क उपचार की सेवा का सातत्य रखा।

बेंगुलूरु (कर्नाटक): नियमित गतिविधियाँह्वपादुका-पूजा, संकीर्तन और गुरुदेव के पुस्तकों का स्वाध्याय सहित सत्संग; प्रति शुक्रवार को स्तोत्रों के पाठ सहित सत्संग; प्रति माह प्रथम रविवार को मन्दिर में भव्य अभिषेकम्, सत्संग और स्वाध्याय; तृतीय रविवार को ३ घण्टों का कीर्तन और चतुर्थ रविवार को ३ घण्टों पर्यन्त भक्ति-संगीत। विशेष गतिविधियाँह्व(१) नवरात्रि-उत्सव, (२) गुरुदेव की अखिल भारतीय यात्रा के हीरक-महोत्सव की स्मृति के उपलक्ष्य में, ''शिवानन्द युवा सम्मेलन'' : दिनभर के कार्यक्रमों में ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र, प्रभातफेरी, पाँच प्रवचनों के आयोजन में, गुरुदेव के, वर्ष १९५०, दिये प्रवचन का समावेश, ''स्वामी शिवानन्द जी के जीवन तथा उपदेश'' विषयक तथा "Arise, Awake and Illumine"ह्व दो दृश्य-श्राव्य कैसेट्स, प्रश्न-उत्तर सत्र, प्रश्न सत्र, गुरुदेव तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की पुस्तकों की प्रदर्शनी और श्री वी. एल. नागराज जी द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन।

बरबिल् (उड़ीसा): शाखा ने साप्ताहिक सत्संग प्रति गुरुवार को; चल-सत्संग प्रति सोमवार को; कार्तिकी पूर्णिमा को पादुका-पूजा, भगवद्गीता पाठ और प्रसाद-सेवन एवं शिवानन्द चेरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय द्वारा दो महीनों में ९५० मरीजों के उपचार सम्पन्न किये।

बरगढ़ (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्वद्विवार पूजाएँ, दैनिक सान्ध्य स्वाध्याय, दैनिक योगासन-वर्ग, प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति रविवार को

अध्ययन मण्डली की गतिविधियाँ और दैनिक होमियोपैथिक औषधालय। विशेष गतिविधि में कार्तिकी पूर्णिमा को साधना-दिन मनाया गया।

बारिपदा (उड़ीसा): शाखा की प्रति गुरुवार पादुका-पूजा, दिनांक ७ नवम्बर को पादुका-पूजा सहित साधना-दिन और विशेष चल-सत्संग उचित स्वरूप से परिचालित हुए। कुष्ठरोगियों की एक संस्था के ७८ निवासियों को निःशुल्क दवाइयाँ, अन्य एक इस प्रकार की संस्था के १५० निवासियों को अन्न (भोजन) वितरित हुए एवं एक अनाथालय में दिनांक ३, ९ और २६ को बिस्कुट और मिठाइयाँ वितरित हुईं।

ब्रह्मपुर, लांजीपल्ली (उड़ीसा): शाखा की नियमित मासिक नारायण-सेवा के आधिक्य में एक विशेष सत्संग आयोजित किया गया जिसमे स्वाध्याय, श्री हनुमान चालीसा के पाठ और 'रामचरित मानस' में से पाठ आदि सम्पन्न हुए।

भवानीपटना (उड़ीसा): शाखा ने सप्ताह में द्विवारह्लप्रति गुरुवार और प्रति रविवार सत्संग, दिनांक ३ अक्तूबर को मासिक साधना-दिन और 'शिवानन्द-दिवस' को पादुका-पूजा परिचालित की।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के दैनिक सान्ध्य-सत्संग में 'श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र' का पाठ भी किया जाता है।

ब्रह्मपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियों में शाखा दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र में जप तथा ध्यान, प्रभात में भजन-कीर्तन और पादुका-पूजा तथा सायंकालीन सत्संग में स्वाध्याय के अतिरिक्त शाखा द्वारा "Coordination Committee" (समन्वय समिति) के पाँच पदाधिकारियों के आगमन तथा मुलाकात के उपलक्ष्य में, एक विशेष मीटिंग-सभा, आयोजित की गयी।

भुवनेश्वर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्लह्लप्रति गुरुवार साप्ताहिक सत्संग, प्रतिमाह अन्तिम रविवार को मासिक साधना-दिन और ''चिदानन्द-दिवस'' को हरिहाट। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) समीपवर्ती एक ग्राम में एक चल-सत्संग। (२) श्री कृष्ण जयन्तीह्लह्ल२४ घण्टों पर्यन्त, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मन्त्र का अखण्ड कीर्तन। (३) शिवानन्द-जयन्तीह्लह्लब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, प्रभातफेरी, स्वाध्याय, लक्षार्चना सहित पादुका-पूजा, हवन, गीता के ९ अध्यायों का पाठ, वीडियो शो, अनाथों की स्कूल के ८० बालकों को अन्नदान और वस्त्र-वितरण, गुरुदेव के जीवन तथा उपदेश पर प्रवचन आदि। (४) चिदानन्द-जयन्ती : शिवानन्द-जयन्ती के समान ब्राह्ममुहूर्त से ले कर आध्यात्मिक कार्यक्रम एवं स्तोत्र-पाठ, अन्धजनों की शाला के ९७ छात्रों को अन्नदान, मरीज़ों को फल और औषधियों का वितरण, अपराह्न में हरिहाट तथा गीता-पाठ, निबन्ध, वक्तृत्व स्पर्धा और विश्व-प्रार्थना की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार-वितरण। पश्चात् उनके और आदरणीय श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी के प्रवचन। (५) साधना-सत्र : दिनांक ८ सितम्बर से दिनांक २४ सितम्बर पर्यन्त १७ दिवसीय साधना-सत्र में, श्री शिवानन्दह्लश्री चिदानन्द जयन्तियों के समान आध्यात्मिक कार्यों के आधिक्य में, विविध देवों की लक्षार्चना पूर्वाह्न में, भजन-कीर्तन और श्रीमद् भगवद् गीता और 'श्री रामचरित मानस' विषयक प्रवचन। (६) रक्तदान कैम्प; दिनांक १९ सितम्बर को।

बीकानेर (राजस्थान): दैनिक द्विवार पूजा, २ घण्टों के स्वाध्याय के अतिरिक्त माह नवम्बर के दिनांक ९ और २७ को चल-सत्संग; शिवानन्द-दिन, चिदानन्द-दिन के आध्यात्मिक कार्यक्रम, दैनिक योगासन-वर्ग, शिवानन्द पुस्तकालय और निर्धन छात्रों को कैश का दान। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव के दिनांक २५ से दिनांक ३० नवम्बर पर्यन्त ६ दिवसीय कार्यक्रम : आदरणीय श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी महाराज का शुभ आगमन और दैनिक प्रवचन; दिनांक २७, २८, २९ नवम्बर को भक्तों के निवासस्थानों पर पादुका-पूजा; ''श्री रामचरित मानस तथा श्री स्वामी शिवानन्द जी का जीवन और उपदेश'' विषयक निबन्ध-प्रतियोगिता, गीता-पाठ की प्रतियोगिता। (२) दीपावली का पावन पर्व : विशेष पूजा, स्तोत्र-पाठ, सुशोभन। (३) गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, प्रसाद-वितरण। (४) कार्तिक, पीपल तथा तुलसी माता की पूजा। (५) गुरु नानक जयन्ती : सिख धर्मग्रन्थ का पाठ, संकीर्तन, प्रसाद।

बिलासपुर (छत्तीसगढ़): शिवानन्द-दिवस तथा चिदानन्द-दिवस को सत्संग।

ब्रह्मान्तराल (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने दैनिक १ घण्टे पर्यन्त महामन्त्र संकीर्तन और सत्संग के अतिरिक्त प्रति गुरुवार को चल-सत्संग, माह की प्रथम एकादशी को श्रीमद् भगवद्गीता-पारायण और द्वितीय एकादशी को संकीर्तन; प्रति सोमवार को लगभग १५० निराश्रय जनों को अन्नदान आदि सम्पन्न किये।

चंडीगढ़ : शाखा के दैनिक सान्ध्य-सत्संग और योगासन के आधिक्य में प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, लगभग ३०० व्यक्तियों को अन्नदान, लगभग ५० मरीजों की निःशुल्क जाँच और उन्हें दवाइयों का वितरण नियमित रूप से चलते हैं। अधिक में, शाखा ने श्रद्धेय श्री स्वामी रामराज्यम् जी और श्रद्धेय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी के शाखा में आगमन पर बालकों के लिए ३ दिवसीय शिविर तथा दिनांक २९ को चल-सत्संग में प्रवचन आयोजित किये।

छत्रपुर (उड़ीसा): दैनिक सान्ध्य-सत्संग, प्रति गुरुवार साप्ताहिक सत्संग; अक्तूबर-नवम्बर माहावधि में एक समीपवर्ती ग्राम

में आयोजित चल-सत्संग सहित आठ चल-सत्संग; शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा; दिनांक १७ अक्तूबर और दिनांक १६ नवम्बरह्लह्लउभय संक्रान्ति दिवसों को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण आदि गतिविधियों सहित शाखा ने कार्तिक के माह में सुन्दर प्रतिभावयुक्त श्री रामचरित मानस की माहभर कथा सम्पन्न की। कथा के समापन दिवस को आदरणीय श्री स्वामी रामकृपानन्द जी ने विशाल श्रोता-समुदाय को प्रवचन दिया।

चेन्नै, अन्ना नगर (तमिल नाडु): शाखा के दिनांक २८ नवम्बर के सत्संग में, ''दिव्यता और अमरत्व'' विषयक प्रवचन आयोजित किया।

दिगपहंडी (उड़ीसा): शाखा की दैनिक द्विवार पूजा, साप्ताहिक द्विवार सत्संग, संक्रान्ति दिन को विशेष सत्संग, शिवानन्द-दिवस तथा चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा के आधिक्य में (१) आदरणीय श्री स्वामी रामकृपानन्द जी तथा शाखा के सचिव द्वारा दिनांक १ नवम्बर को "Spiritual Education and Ethical Teaching" विषयक एक हाईस्कूल में प्रवचन; (२) उसी हाईस्कूल में श्री स्वामी जी द्वारा योगासन-वर्ग; (३) कार्तिकी पूर्णिमा को २४ घण्टों में श्रीमद् भागवत पारायण आदि विशेष गतिविधियाँ पूर्ण की गयीं।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दैनिक पूजा, दैनिक, माहभर के लिए श्री रामचरित मानस का पारायण, प्रति बुधवार साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त (१) धन्वन्तरी जयन्ती : दीप सुशोभन; (२) प्रबोधिनी एकादशी : श्री विष्णु भगवान् की विशेष पूजा की गतिविधियाँ सुचारु रूप से सम्पन्न कीं।

घाटपद्पुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, श्री रामायण-पाठ, पूजा, योगासन-वर्ग, संकीर्तन सहित सान्ध्य-सत्संग, प्रति गुरुवार पादुका-पूजा, प्रति शनिवार को सुन्दरकाण्ड-पाठ और श्री विष्णुसहस्रनाम का पाठ आदि पूर्ण करके, श्री लक्ष्मी-पूजा, दीप-सुशोभन दीपावली पर्व को और प्रबोधिनी एकादशी को ३ घण्टों का अखण्ड कीर्तन आदि आयोजित किये।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): (१) दैनिक : ३ बार शिवानन्द आश्रम के विश्वनाथ मन्दिर में पूजा, ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन-वर्ग, २ घण्टों का सान्ध्य-सत्संग, (२) साप्ताहिक : प्रति गुरुवार पादुका-पूजा, प्रति शनिवार सुन्दरकाण्ड पारायणह्लह्लइस प्रकार की नियमित गतिविधियों की पूर्णता के अतिरिक्त शाखा ने विशेष गतिविधियों में, दिनांक ३ नवम्बर को, श्री लक्ष्मी-देवी पूजा, सत्संग और विशेष सुशोभन सहित दीपावली पर्व मनाया।

हंसुरा (उड़ीसा): विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) पुण्यतिथि : पूर्व दिवस को १२ घण्टों का अखण्ड कीर्तन और पुण्यतिथि को ब्राह्ममुहूर्तीय सभा से आरम्भित आध्यात्मिक कार्यक्रमों सहित, मरीज़ों को फल-वितरण और निर्धनों को कैश तथा वस्त्र-वितरण। (२) समीपवर्ती शाखा के, शिवानन्द-जयन्ती के कार्यक्रमों में प्रतिभागिता। (३) चिदानन्द-जयन्ती : पूर्व दिन को दिव्य जीवन संघ के भक्तोंयुक्त परिषद्, दिनांक २४ सितम्बर को प्रार्थना-ध्यान, पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, प्रसाद-सेवन तथा अपराह्न में तीन बजे गीता-पाठ और सायंकाल में सत्संग।

इम्फाल (मणिपुर): शाखा के सम्पन्न कार्यक्रम : पूर्णिमा को भगवद्गीता विषयक प्रवचन सहित मासिक सत्संग, शिवानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा, भजन, प्रवचन, गुरुदेव की पुस्तक 'भक्ति और संकीर्तन'' का विमोचन तथा चिदानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा और कीर्तन।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): शाखा ने दैनिक ध्यान, अध्ययन-मण्डली, साप्ताहिक सत्संग और हवन, मातृ-सत्संग, दैनिक योगासन-वर्ग, निर्धनों को हर सप्ताह फल-वितरण, स्वामी शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय की नियमित गतिविधियों के आधिक्य में, गोवर्धन-पूजा के दिवस को अन्नकूट और प्रसाद-सेवन सम्पन्न किये।

काकिनाड़ा, माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त शाखा ने प्रति मंगलवार और प्रति शुक्रवार को दो अन्य केन्द्रों पर सत्संग और दो चल-सत्संग पूर्ण करके प्रति रविवार को निःशुल्क होमियोपैथिक शिविरों का सातत्य रखा।

कंटाबाँझी (उड़ीसा): शाखा के रविवार के सत्संग में श्रीमद् भगवद् गीता का स्वाध्याय और आध्यात्मिक प्रवचन समाविष्ट थे।

रवारियागुडा (उड़ीसा): शाखा के दिनांक ३१ अक्तूबर के दसवें चल-सत्संग में ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन, पूर्वाह्न में प्रभातफेरी और पादुका-पूजा, अपराह्न में स्तोत्र-पाठ और स्वाध्याय तथा सान्ध्य-सत्र में प्रवचन सम्पन्न किये गये।

कोलकाता (पश्चिम बंगाल): शाखा ने दिनांक २८ नवम्बर को दिवसभर के कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, वीडियो-दर्शन, स्तोत्र-पाठ और जप सहित, ५६ प्रतिभागियों युक्त साधना-दिन मनाया और १५२ बालकों के उपचार युक्त एक मेडिकल कैम्प आदि परिचालित किये।

नलगोंडा (आन्ध्र प्रदेश): नियमित गतिविधियाँह्लह्लदैनिक सत्संग; प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल पुण्यतिथि दिवस, शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को क्रमशः विशेष सान्ध्य-सत्संग, शाखा के सचिव श्री द्वारा प्रवचन और सरकारी अस्पताल में भर्ती मरीजों को फल और बिस्कुटों का वितरण।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा ने सुचार रूप से, दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र, सान्ध्य-सत्संग; साप्ताहिक चल-सत्संग,

मातृ-सत्संग और श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण, पाक्षिक एकादशी के सत्संग सम्पन्न कर, विशेष गतिविधियों में : शाखा-स्थापना-दिन, दिनांक २१ नवम्बर को विशेष सत्संग और शिव-अभिषेकम्, प्रातः हवन तथा अपराह्न में ३ घण्टों का विशेष सत्संग।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा साप्ताहिक रविवारीय सत्संगों में, प्रथम रविवार को सुन्दरकाण्ड पारायण, द्वितीय को ध्यान, तृतीय को स्वाध्याय और चतुर्थ रविवार को प्रवचन पूर्ण करती है।

पटियाला (पंजाब): शाखा द्वारा आयोजित दिनांक २० और दिनांक २१ के उत्तर भारत क्षेत्रीय डिवाइन लाइफ परिषद् में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, श्रद्धेय श्री स्वामी रामराज्यम् जी, श्रद्धेय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी रामप्रेमानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी वेदानन्द जी, प्रोफेसर आर. के. भारद्वाज जी और अन्य अनेक विद्वानों और महानुभावों ने आ कर परिषद् की शोभा बढ़ायी। ९ राज्यों के अनेक भक्तों ने अपनी उपस्थिति दी।

फुलबानी (उड़ीसा): शाखा की दैनिक, साप्ताहिक और शिवानन्द-दिवस तथा चिदानन्द-दिवस की मासिक गतिविधियों के उपरान्त, दिनांक १४ से २० नवम्बर पर्यन्त भागवत सप्ताह और उसके समापन में हवन। आराधना; नाम-संकीर्तन आदि दिनांक २१ नवम्बर को; परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि को मुख्यत्वे, पादुका-पूजा, मन्त्र-जप और संकीर्तन सम्पन्न हुए।

राहामा (उड़ीसा): परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकालीन सत्संग आदि तथा शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती आदि शाखा की गतिविधियाँ थी।

राउरकेला (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्वह्वब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन, प्रति गुरुवार के सुबह-शाम साप्ताहिक प्रभातीय और सान्ध्य-सत्संग, चल-सत्संग, शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा, चिदानन्द-दिन को सान्ध्य-सत्संग। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) श्री कृष्ण-जयन्ती। (२) पुण्यतिथि के ब्राह्ममुहूर्त से सान्ध्य-सत्संग पर्यन्त प्रवचन, नारायण-सेवा सहित आध्यात्मिक कार्यक्रम, निर्धनों को अन्न का व कैश का दान। (३) शिवानन्द-जयन्ती पुण्यतिथि के समान कार्यक्रम। (४) युवा-शिविर : दिनांक १९ सितम्बर को, ८५ छात्रों की प्रतिभागिता, आदरणीय श्री स्वामी साक्षात्कारानन्द जी के प्रवचनों युक्त शिविर परिचालन। गीता-पाठ और परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चित्र बनाने की प्रतियोगिता तथा अन्य अनेक महान् आध्यात्मिक कार्यक्रम।

राउरकेला, स्टील टाउनशिप (उड़ीसा): विशेष गतिविधियाँ ह्वह्व(१) श्री कृष्ण जयन्ती : प्रातः ६-०० से ले कर मध्यरात्रि पर्यन्त आध्यात्मिक कार्यक्रम। (२) नन्द-उत्सव : १५० भक्तों की उपस्थिति में साधना-दिन तथा मध्याह्न भोजन-प्रसाद। (३) शिवानन्द-जयन्ती : ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र, प्रभातफेरी, पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन आदि, प्रसाद-सेवन, नारायण-सेवा और आदरणीय श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी द्वारा प्रवचन। (४) चिदानन्द-जयन्ती : शिवानन्द-जयन्ती जैसे ही कार्यक्रम और दो प्रवचनों का आधिक्य। (५) भागवत सप्ताह : दिनांक २३ से दिनांक २९ पर्यन्त। शाखा ने साप्ताहिक चल-सत्संग भी किया।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँह्वह्वदैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रभात में स्तोत्र-पाठ और ध्यान, सायं-सत्संग, शिवानन्द-दिवस को पादुका-पूजा, दिनांक ९ अक्तूबर को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण। प्रति रविवार को आध्यात्मिक कार्यक्रमों का वैविध्य। माह अक्तूबर में ९६ छात्रों को योगासन-शिक्षण दिया गया। रविवारीय मेडिकल शिविरों में १३० मरीजों के निःशुल्क उपचार और औषधियों का दान।

शिवथियापुरम् (तमिल नाडु): दैनिक भजन-कीर्तन के अतिरिक्त शाखा ने पूर्ण समय आध्यात्मिक पुस्तकालय तथा वाचन-कक्ष का प्रारम्भ किया।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): दैनिक द्विवार पूजाएँ, साप्ताहिक सामान्य सत्संग और बालकों के लिए साप्ताहिक सत्संग, प्रभातीय पादुका-पूजन और ३ घण्टों के सान्ध्य-सत्संग के आधिक्य में शाखा ने, दिनांक ४ नवम्बर को ३ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र कीर्तन, दिनांक १५ से दिनांक २९ नवम्बर पर्यन्त भागवत सप्ताह, जिसके अन्तिम दिन को कुष्ठरोगियों की संस्था के २९ परिवारों सहित, १२०० व्यक्तियों द्वारा प्रसाद-सेवन।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा के साप्ताहिक द्विवार सत्संग के अतिरिक्त श्री महा-अष्टमी और विजयादशमी को महिलाओं द्वारा विशेष पूजा की गयी। श्री रासलीला पूर्णिमा को अनेक सदस्यों का मन्त्रदीक्षा-दिन होने से शाखा ने पादुका-पूजा, हवन, पूर्वाह्न में मन्त्र-जप और सायंकाल में एक विशेष सत्संग रखा

वडोदरा (गुजरात): गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने अपनी अखिल भारतीय आध्यात्मिक यात्रा के दौरान दिनांक १ नवम्बर, १९५० में वडोदरा शाखा का उद्घाटन किया था। इस महान् घटना की स्मृति में, हीरक महोत्सव के दिवस ३०, ३१ अक्तूबर और १ नवम्बर को दसवीं समस्त गुजरात द डिवाइन लाइफ परिषद् आयोजित की गयी। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी निराकारानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी

धर्मनिष्ठानन्द जी, आदरणीय स्वामी भक्तिप्रियानन्द जी, आदरणीय श्री डॉ. पंकज जोशी जी, सीनियर प्रोफेसर, आदरणीय प्रोफेसर आर. के. गोयल जी, उपकुलपति, एम. एस. युनिवर्सिटी, आदरणीय डॉ. अनिल काणे जी, भूतपूर्व उपकुलपति, एम. एस. युनिवर्सिटी, आदरणीय डॉ. श्री गुणवन्त जी शाह, आदरणीय श्री हरिभाई कोठारी जीह्वह्वउभय नामांकित विद्वान्, तीन अन्य आदरणीय ब्रह्मचारी जी ने प्रेरक प्रवचन दिये। जल-तरंग और शहनाई वादन, शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य, भजन और श्री सुन्दरकाण्ड का पाठह्वह्वसब सुप्रसिद्ध कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किये और परिषद् के वे आकर्षक और महत्त्व के कार्यक्रम थे। एक सावेनीरह्वह्वस्मृतिग्रन्थह्वह्वदस अमूल्य पुस्तकों और दस पुस्तिकाओं का निःशुल्क वितरण के लिए विमोचन हुआ।

गुजरात राज्य के मुख्यमन्त्री आदरणीय श्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने हीरक परिषद् के लिए निज आशीर्वाद प्रेषित किये और परिषद् की भव्य सफलता हेतु कामना की। ये उनकी उदारता के द्योतक हैं।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा के पाक्षिक सत्संग दिनांक १४ और २८ नवम्बर को सम्पन्न हुए।

विक्रमपुर (उड़ीसा): शाखा ने निज दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान सभा, द्विवार पूजा और सत्संग तथा स्वाध्याय सायंकाल में पूर्ण करने के आधिक्य में प्रति बुधवार साप्ताहिक सत्संग, एक चल-सत्संग और तीन अवसरों पर पादुका-पूजा पूर्ण की।

विदेशी शाखा

मॉरिशस शाखा, रोज़ हिल : नियमित गतिविधियाँह्वह्वसत्संग और योगासन-वर्ग। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) शिवानन्द-जयन्ती : गुरुदेव के जन्मदिन को ५ दिवसीय कार्यक्रम रखे गये। (१) दिनांक ८ सितम्बर को गुरु-पूजा और आश्रम में निर्धनों को अन्नदान। (२) दिनांक १२ को महेबुर्ग में उत्सव। (३) दिनांक १६ को एक सरकारी स्कूल में गुरुदेव की पुस्तकों का वितरण। (४) दिनांक १८ को, ''शिवानन्द हिलींग एसोसिएशन'' में उत्सव। (५) दिनांक २६ को आश्रम में समापन-समारोह में भजन-कीर्तन, प्रवचन और महाप्रसाद। (२) श्री दुर्गा पूजा : दैनिक प्रभात में ९-०० से १०-३० पर्यन्त दुर्गा-पूजा; देवी माहात्म्य पाठ अपराह्न में १ से ३ पर्यन्त; सत्संग ३-३० से ४-३० पर्यन्त और सायंकाल में भजन-कीर्तन। पूर्णाहुति दिन को महाप्रसाद वितरित हुआ।

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर २२ से २६ जनवरी २०११ तक मानव सेवा ट्रस्ट कॉम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशनह्वह्वमालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशि रु. ३००/- प्रति व्यक्ति।

नामांकन प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २०१०। नामांकन के लिए फ़ार्म श्री विजय स्वाँई, ४ सी मेहेर अली मंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाताह्वह्व७०० ०२७, पश्चिम बंगाल को भेजने होंगे।

नामांकन तथा अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें : डा. पी. के. सामन्तरे, मो. नं. ०९००२०८०५१४; श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१४४१४७; श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३००४०७३० और श्री विजय स्वाँई, मो. नं.०९३३९३९२८४५।

सभी भक्तों से निवेदन है कि शिविर में भाग लें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

फोर्थ कवर जनवरी २०११

जीवन–ध्येय

यह दिखलायी पड़ने वाला प्रपंच (संसार और उसका विस्तार) भगवान् के द्वारा निर्देशित तथा नियोजित है। उसमें हमारी एक भूमिका है।

बन्धनमुक्त रहते हुए अपनी भूमिका को कुशलतापूर्वक निभाइए। भगवान् के चरणारविन्द में अपना मन लगाये रखिए। अस्थि–चर्ममय नश्वर देह में आसक्त मत होइए। जिस प्रकार साँप केंचुली छोड़ता है, उसी प्रकार आप देहासक्ति को छोड़ दीजिए। देह–त्याग के लिए सदा तैयार रहिए। पूर्ण रूप से निर्भय बनिए।

जब तक देहाध्यास है, तब तक आत्म–साक्षात्कार सम्भव नहीं है। कृतसंकल्प हो कर कहिएह्नह्नमैं इसी जन्म में आत्म–साक्षात्कार करूँगा।

सुख–दुःख, जन्म–मरण, बन्धन–मुक्ति, लाभ–हानि आदि द्वन्द्व मनोकल्पना हैं। द्वन्द्वातीत बनिए। न आपका जन्म होता है, न मृत्यु। आप अमर आत्मा हैं। जन्म–मरण इस देह तक ही सीमित रहता है।

आप जीवन्त सत्य हैं। अनुभव कीजिए कि आप उस परम सत्ता से अभिन्न है, जो आभासी नाम–रूपों और मिथ्या जगत् का आधार है। आप कारण, देश और काल से परे हैं। ब्रह्मह्नह्नजो प्रकाशों का प्रकाश हैह्नह्नमें रम जाइए। आप विक्षेप–रहित हो जायेंगे। आप अभेद्य हो जायेंगे। गहन समाधि में अपने अन्तर्ज्ञान द्वारा इसका अनुभव कीजिए।

अब यमराज भी आपसे भयभीत हो कर काँपेगा। आपके निर्देश से ही सूर्य प्रकाशित होगा, अग्नि प्रज्वलित होगी और वायु बहेगी। आपकी आज्ञा से ही इन्द्र, प्रजापति, वरुण आदि अपने–अपने निर्धारित कर्म करेंगे। अब माया आपके वश में रहेगी।

चट्टान के समान दृढ़ रहिए। संसार में सिंह की तरह विचरण कीजिए। संसार–दलदल में धँसी छटपटाती आत्माओं का उद्धार कीजिए। आत्मज्ञान का प्रचार–प्रसार कीजिए। उदार और विश्व–प्रेमी बनिए। जो आपका अहित करे, उसके साथ भी प्रेमपूर्ण व्यवहार कीजिए। व्यावहारिक वेदान्ती बनिए।

अपनी आत्मिक शक्ति में आस्था रखिए। स्वावलम्बी बनिए। संसार से विमुख हो जाइए। सांसारिक सहारों पर भरोसा न कीजिए। किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के बन्धन में बद्ध न होइए। परिग्रह की इच्छा का त्याग कीजिए। अन्तरात्मा से तादात्म्य स्थापित करके मुक्त हो जाइए। अब आप समग्र विश्व को चुनौती दे सकते हैं।

जागिए, उठिए। आत्मानन्द की सरिता प्रवाहित हो रही है। जी–भर कर इस आनन्दामृत का पान कीजिए। आत्मानन्द के सागर की तुलना में समग्र

त्रिलोकी का सुख नगण्य है। आपके लिए अमूल्य आत्म-सम्पदा प्रस्तुत है। इससे प्राप्त होने वाले अलौकिक सुख का आनन्द उठाइए। दूर-सुदूर इस सम्पदा का वितरण कीजिए।ह्वह्वस्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव के अन्तर की गहनता से निःसृत आशीर्वादों के फलस्वरूप, दिव्य जीवन संघ, मुख्यालय, लक्ष्मणझूला के समीप तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' द्वारा निज नम्र सेवा अर्पित करता है। वह, जो निराश्रय लोग अस्वस्थ हैं तथा अस्पताल में भर्ती हो कर उपचार और स्नेहमय देखभाल की आवश्यकता में हैं उन्हें चिकित्सामय सुविधा तथा उपचार प्रदान करता है।

यह जानना प्रायः रसप्रद होता है कि भिन्न-भिन्न लोग अपने रोग, हानि-क्षति, अक्षमताएँ और दर्द के निर्वाह, व्यवहार हेतु कितनी भिन्न-भिन्न पद्धतियों का उपयोग करते हैं। यह जानना तो अधिक ही रसप्रद होता है कि हम अपनी शारीरिक पीड़ा, असुविधा, चोट अथवा प्रतिकूलता किस तरह निभाते हैं। पश्चात्, एकाएक एक विचार : मैं यह शरीर, मन नहीं हूँ, अमर आत्मा हूँ मैं, विलीन होता दिखता है। 'होम' के स्त्री-विभागों में से एक विभाग में निम्नानुसार वार्तालाप सुनायी दियाह्वह्व''मैं त्रिवेणी घाट जा रही हूँ! कौन मेरे साथ आ रहे हैं?'' एक वयस्क, मानसिक रूप से समस्यात्मक, दमा-श्वास रोग से पीड़ित स्त्री, शब्दों के उच्चारण के मध्य श्वास लेने के लिए हाँफती, पूछ रही है।

''मैं आपके साथ आ रही हूँ'', एक तरुणी, जिसके दोनों पैर पक्षाघातग्रस्त हैं, उत्तर दे रही थी। ''ऊँह! तुम तो बिलकुल चल ही नहीं सकती। तुम ज़मीन पर एक कदम भी नहीं रख सकती, तुम मेरे साथ कैसे आओगी?'' उपहाससूचक और कठोर प्रत्युत्तर!

''आप मेरे विषयक जानती ही क्या हो?''ह्वह्वयुवती का दृढ़ उत्तर! और वह कह रही है, ''रात्रि में जब आप खर्राटे लेती हैं, तब मैं अपनी शय्या पर से नीचे उतरती हूँ और आसपास, हर जगह घूमती हूँ एवं सूर्योदय होता है तब मैं पुनः अपनी शय्या पर होती हूँ....मेरे पैर हलन-चलन करने का अस्वीकार करते हैं। अतः हम दोनों, रात्रि को त्रिवेणी घाट पर घूमने जायेंगे तथा यह भी देखते हैं, कौन प्रथम पहुँचती है?

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें। रोगियों की सेवा करें। यही दिव्य जीवन है।'' स्वामी शिवानन्द

महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ का ६७ वाँ महोत्सव

''हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।

कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा।।

दिव्य नाम के कीर्तन के महत्त्व की स्तुति में, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज कहते हैंह्न

''कीर्तन अमृत है। कीर्तन आत्मा का दिव्य आहार है। कीर्तन आपको अमर कर सकता है। महामन्त्र का गान करो :

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।''

पूज्य गुरुदेव द्वारा दिनांक ३ दिसम्बर १९४३ में आरम्भित महामन्त्र संकीर्तन यज्ञ, विश्व-शान्ति हेतु जो गत ६७ वर्षों पर्यन्त, भजन हॉल में, रात-दिन और वर्ष के सब दिनों को निरन्तर सम्पन्न किया जा रहा है, उसका सातत्य सदैव है। पवित्र यज्ञ का ६७ वाँ धन्य वार्षिक दिन, दिनांक ३ दिसम्बर २०१० को महान् पावित्र्य और आध्यात्मिक प्रफुल्लता से मनाया गया।

उत्सव के मंगलाचरण के रूप में, दिनांक २७ नवम्बर से दिनांक २ दिसम्बर पर्यन्त, दैनिक तीन घण्टोंपर्यन्त, पावनतम महामन्त्र का सामूहिक कीर्तन किया गया। दिनांक ३ दिसम्बर के पुनीत दिवस को, दिव्य नाम मन्दिर में प्रभात में ९ से ले कर ११ बजे पर्यन्त विशेष सत्संग और पूजा का परिचालन हुआ। इस सम्मान्य दिन को विश्व-शान्ति तथा विश्व-कल्याण के लिए आश्रम-यज्ञशाला में हवन किया गया।

अपराह्न में ३-३० को भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण और सद्गुरुदेव के चित्रों सहित सुशोभित पालकी युक्त शोभायात्रा आरम्भित हुई। शोभायात्रा धीरे-धीरे कैलासगेट की ओर बढ़ी। महामन्त्रयुक्त ध्वज और भित्तिपत्रकों एवं महामन्त्र के जीवन्त तथा भावपूर्ण गान ने मुनिकीरेती के समग्र वातावरण को दिव्यता से स्पन्दित किया। पश्चात् भगवान् श्री राम और भगवान् श्री कृष्ण के अष्टोत्तरशत नामावली युक्त पुष्पों से अर्चना की गयी। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज के आशीर्वचनोंयुक्त सन्देश और पावन प्रसाद-वितरण से कार्यक्रम का समापन हुआ।

रात्रि-सत्संग में, नियमित स्तोत्र-पाठ और प्रार्थनाओं के आधिक्य में, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने निज प्रेरक प्रवचन से भक्तों को आशीर्वादित किये।

भगवान् श्री राम, भगवान् श्री कृष्ण और सद्गुरुदेव, दिव्य नाम की सतत स्मृति-गान से हम सबको कृपान्वित करें!

''निःश्वासे न हि विश्वासः कदा रुद्धो

भविष्यति।
कीर्तनीयमतो बाल्याद्धरेर्नामैव केवलम्।।

दिव्य जीवन संघ की पटियाला शाखा में दो दिवसीय परिषद्

दिव्य जीवन संघ की पटियाला शाखा ने दिनांक २० और २१ नवम्बर १०१० को पटियाला के वीर हकीकत राय सिनियर सेकेण्डरी स्कूल में दो दिवसीय आध्यात्मिक परिषद् आयोजित की थी। उन्होंने दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के अमृत महोत्सव की संयुक्तता में यह परिषद् आयोजित की। परिषद् का मुख्य विषय था : 'युवा-जागृति'।

उभय दिवसों में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, श्रद्धेय श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज और श्रद्धेय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने श्रोतागण को प्रवचन दिये। तदुपरान्त, इस अवसर पर अन्य बहुत महानुभावों ने स्व-वक्तव्य किया।

परिषद् में, न ही केवल स्थानिक जन किन्तु पंजाब, हरियाणा के भिन्न स्थानों से आये हुए प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। समीपवर्ती महाविद्यालयों (कॉलेजों) के छात्रों ने इस परिषद् में भाग लिया। उन्होंने निज शंकाओं की स्पष्टता हेतु अनेक प्रश्न पूछे। इन उभय दिनों को सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

दिव्य जीवन संघ की पटियाला शाखा के अध्यक्ष श्री चमन कालिया जी, सचिव श्री सुरेन्द्र गर्ग जी तथा अन्य अनेक सदस्यों ने पटियाला शाखा द्वारा प्रथम ही आयोजित इस परिषद् के परिचालन में कठिन प्रयास किये, जिनसे परिषद् एक भव्य सफलता में परिणत हुई।प

पृष्ठ १६

भेड़िया और भेड़ का बच्चा

एक भेड़िया एक नदी में पानी पी रहा था। नीचे की ओर एक भेड़ का बच्चा भी पानी पी रहा था। उस भेड़िये के मन में उस मेमने को खाने की इच्छा हुई। भेड़िया मेमने के पास आया और बोलाह्न ''हे दुष्ट! मेरा पानी तू क्यों जूठा कर रहा है?''

मेमने ने कहाह्न ''महाराज! मैं कैसे पानी जूठा कर सकता हूँ? पानी तो आपकी ओर से मेरी ओर बह रहा है।'' भेड़िये ने कहाह्न ''नौ महीने पहले तूने मुझे गाली दी थी।'' मेमने ने कहाह्न ''तब तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था।'' भेड़िये ने कहाह्न ''तब वह तेरी माँ होगी।'' यह कर कर भेड़िया फौरन झपट पड़ा और उसने मेमने को चीर-फाड़ कर खा डाला।

दूसरे का दोष देखना बहुत आसान है। बालकों और सयानों में भी कई ऐसे भेड़िये होते हैं। जो दुष्ट बच्चे दूसरों को तंग करते हैं, वे सचमुच भेड़िये ही हैं। अपने अन्दर जो पशुता है, उसे दूर करो। भले बनो, भला करो।

राजमणि

राजमणि मदुरा का निवासी था। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। उसके माता-पिता, दो भाई और बूढ़े दादा-दादी थे।

उसका दादा पिचुमणि ८० साल का था। पिचुमणि राजमणि को बहुत चाहता था। राजमणि जो भी माँगता, वह उसे देता था। कोई भी काम पड़ता, तो वह राजमणि को ही बार-बार आवाज देता। राजमणि अपने दादा को नहीं चाहता था; क्योंकि वह उसे बार-बार काम करने को बुलाता रहता था। उसे खेलने को भी समय नहीं मिलता था। एक दिन शाम को उसका एक मित्र खेलने आया। पिचुमणि ने उसी समय राजमणि से नहाने के लिए गरम पानी ला देने को कहा। पिचुमणि को कम दिखायी पड़ता था। वह बिना किसी का सहारा लिये चल-फिर नहीं सकता था।

राजमणि को गुस्सा आ गया। भगोने में उबलता पानी ले आया और बूढ़े के शिर पर उँडेल दिया। उसके सारे शरीर में फफोले पड़ गये।

हे गोविन्द! राजमणि की तरह कभी व्यवहार न करना। आज्ञाकारी बनो। माता-पिता तथा गुरु जनों की सेवा करना सबसे बड़ा कर्तव्य है। तभी तुम्हें सच्चा सुख, शान्ति और समृद्धि प्राप्त होगी।

अपने काम से काम रखो

एक शरारती बन्दर था। एक दिन खेलते-कूदते वह जंगल में जा पहुँचा। वहाँ एक लट्ठा अधूरा चिरा पड़ा था। चिरे हुए हिस्से में चीरने वालों ने लकड़ी की एक गुल्ली डाल रखी थी। गुल्ली के कारण लकड़ी के बीच में दरार हो गयी थी।

बन्दर गुल्ली के पास जा बैठा। वह उस गुल्ली को खींच कर निकालना चाहता था। वह बहुत मजबूती से फँसी हुई थी, फिर भी पूरी ताकत लगा कर बन्दर ने उसे निकाल ही डाला। लकड़ी के दोनों भाग तुरन्त एक-दूसरे पर चिपक गये और बेचारे बन्दर की पूँछ उसमें फँस गयी। बन्दर वहीं तड़फ-तड़फ कर मर गया।

दूसरों के मामलों में अपनी टाँग न अड़ाओ। अपने काम से मतलब रखो। अपनी राय न देते फिरो। स्वभाव से ही नम्र रहो। कम बोलो, अधिक सोचो-विचारो।